भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान
(वि. अ. आयोग अधिनियम 1956 की धारा 3 के अधीन मानित विश्वविद्यालय घोषित)
वलियमला, तिरुवनंतपुरम 695 547, भारत

हिंदी गृह पत्रिका

अंतरिक्ष धाराएं

(वर्ष 2019 - अंक 2)

हिंदी गृह पत्रिका

अंतरिक्ष धाराएं

वर्ष 2019 - अंक 2

भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान

(वि. अ. आयोग अधिनियम 1956 की धारा 3 के अधीन मानित विश्वविद्यालय घोषित)

वलियमला, तिरुवनंतपुरम

हिंदी गृह पत्रिका

अंतरिक्ष धाराएं

वर्ष 2019 - अंक 2

मुख्य संरक्षक

डॉ. विनय कुमार डढ़वाल

संरक्षक

डॉ. ए. चंद्रशेखर

संपादक मंडल

डॉ. दीपक मिश्रा

डॉ. सर्वेश कुमार

डॉ. उमेश आर. कढ़णे

श्रीमती बिंदिया के. आर.

श्री. अभय जैन

श्रीमती सिमी असफ़

श्री. आर. जयपाल

आवरण पृष्ठ डिजाइन एवं मुद्रण

आईआईएसटी पुस्तकालय

अपना सुझाव एवं प्रतिक्रिया निम्नलिखित पते पर भेजें

संपादक, 'अंतरिक्ष धाराएं'

भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईएसटी)

अंतरिक्ष विभाग, भारत सरकार

वलियमला, तिरुवनंतपुरम – 695 547

hindiofficer@iist.ac.in

भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान
(यूजीसी अधिनियम 1956 की धारा-3 के अधीन मानित विश्वविद्यालय घोषित
भारत सरकार, अंतरिक्ष विभाग, वलियमला पोस्ट, तिरुवनंतपुरम 695 547 भारत

INDIAN INSTITUTE OF SPACE SCIENCE AND TECHNOLOGY
(A Deemed to be University u/s 3 of the UGC Act, 1956)
Government of India, Department of Space
Valiamala P.O., Thiruvananthapuram 695 547 India

www.iist.ac.in
दूरभाष (Tel): +91 471 2568402 फैक्स (Fax): +91 471 2568401 ई-मेल (E-mail): vkdadhwal@iist.ac.in

डॉ. वी. के. डढ़वाल / Dr. V.K. Dadhwal
निदेशक / Director

संदेश

भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान की हिंदी गृह पत्रिका 'अंतरिक्ष धाराएं' का दूसरा अंक आपके सामने रखते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। संस्थान के छात्रगण एवं कर्मचारीगण की वैविध्यपूर्ण रचनाओं का यह समाहार गत वर्ष संस्थान में हुई विविध घटनाओं का परिचय भी देता है। भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के विशेष पहलू के रूप में इस पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया गया था। प्रथम अंक के संबंध में प्राप्त विचारों, टिप्पणियों और सुझावों से इस अंक में सुधार लाने की प्रेरणा मिली है। पाठकगण हमारी कृतज्ञता का पात्र है।

इस अंक के प्रकाशन के लिए जिन छात्रों व कर्मचारियों ने अपनी रचनाएं भेज दी हैं उनको बधाइयाँ। आशा करता हूँ कि यह अंक आपको पसंद आएगा। पाठकों से यह अपेक्षा रखते हैं कि वे अपने विचार एवं सुझाव अवश्य भेज दें।

हार्दिक शुभकामनाएं ।

वि. कु. डढ़वाल
23-1-19
विनय कुमार डढवाल
निदेशक एवं अध्यक्ष, रा. का. स. (आईआईएसटी)

संपादक की कलम से

अत्यंत हर्ष के साथ हम भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईएसटी) की हिंदी गृह पत्रिका 'अंतरिक्ष धाराएं' का दूसरा अंक आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं। उम्मीद करते हैं कि आपको यह अंक पसंद आएगी । इस अंक में छात्रों एवं कार्मिकों के लेख, कहानियां, कविताएं और विविधता भरे रोचक कृतियों का समावेश किया गया है। रचनाओं में नवीनता और रोचकता के साथ साथ इस बात पर भी ध्यान दिया गया है की यह समान्य पाठक वर्ग के लिए उपयोगी भी हो।

इस पत्रिका को मूर्त रूप प्रदान करने में जिन लेखकों ने योगदान दिया है, उन्हें हम बधाई देते हैं। सभी लेखकों एवं रचनाकारों को हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए यह मंगल कामना करते हैं कि भविष्य में भी उच्च स्तर की सामग्री से इस पत्रिका की प्रगति हो ।

पाठकों से हमारा यह अनुरोध है कि इसे पढने के बाद आपके विचार और बहुमूल्य सुझावों से हमें अवगत कराएं ताकि आगामी अंकों में सुधार लाया जा सके ।

शुभकामनाओं सहित

आर. जयपाल
वरिष्ठ हिंदी अधिकारी

संस्थान एक झलक

भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईएसटी) की स्थापना भारत सरकार, अंतरिक्ष विभाग ने वि.अ.आ. अधिनियम 1956 की धारा 3 के अधीन मानित विश्वविद्यालय के रूप में वर्ष 2007 में की। अब संस्थान अपने बारहवें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। यह संस्थान अंतरिक्ष विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं अनुप्रयोग के विविध क्षेत्रों में स्नातक, स्नातकोत्तर, डॉक्टरल एवं पोस्ट डॉक्टरल कार्यक्रम प्रदान करता है।

कार्यक्रम एवं गतिविधियां
शैक्षिकी

संस्थान तीन स्नातक कार्यक्रम, पंद्रह स्नातकोत्तर कार्यक्रम एवं पूर्ण कालिक व अंश कालिक पीएचडी कार्यक्रम प्रदान करता है। शैक्षिकी परिषद के निर्णय, शैक्षिक प्रबंधन के अनुमोदन तथा एआईसीटीई के अनुमोदन प्रक्रिया के आधार पर स्नातक कार्यक्रम **बी.टेक. (एविओनिकी)** को **एविओनिकी में विशेषज्ञता के साथ इलक्ट्रोनिकी एवं संचार इंजीनियरी में बी.टेक.** के रूप में पुनर्नामकरण किया गया है। स्नातक कार्यक्रमों में वांतरिक्ष इंजीनियरी में एवं ईसीई (एविओनिकी) में बी.टेक. तथा इंजीनियरी भौतिकी में बी.टेक. के साथ दोहरी उपाधि कार्यक्रम शामिल है। वांतरिक्ष इंजीनियरी एवं ईसीई (एविओनिकी) प्रत्येक में 60 सीटें तथा इंजीनियरी भौतिकी में 20 सीटें उपलब्ध हैं। दोहरी उपाधि कार्यक्रम के छात्र निम्नलिखित में से अपना स्नातकोत्तर शाखा चुनता है। i) प्रकाशिक इंजीनियरी में या ii) पृथ्वी तंत्र विज्ञान में प्रौद्योगिकी निष्णात की उपाधि या iii) खगोल

विज्ञान एवं खगोल भौतिकी या iv) ठोस अवस्था भौतिकी में विज्ञान निष्णात की उपाधि। जुलाई 2018 में कुल मिलाकर 140 छात्रों को प्रवेश दिया गया । यह संस्थान वर्तमान में 15 प्रौद्योगिकी निष्णात / विज्ञान निष्णात कार्यक्रम प्रदान कर रहा है। इन कार्यक्रमों में प्रवेश गेट या जेस्ट जैसी राष्ट्रीय स्तर की परीक्षाओं में छात्रों के निष्पादन तथा उसके बाद होने वाले साक्षात्कार के आधार पर दिया जाता है। यह संस्थान अनुसंधान आउटपुट बढ़ाने के लिए पी.एच.डी. कार्यक्रमों को ओर सशक्त बनाते हुए आगे बढ़ता है। जुलाई 2017 एवं जनवरी 2018 में पी.एच.डी. छात्रों को प्रवेश दिया गया। पीएचडी कार्यक्रम में इसरो से प्रायोजित उम्मीदवार भी हैं।

प्रमुख उपलब्धियां

भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय (एमएचआरडी) द्वारा स्थापित राष्ट्रीय संस्थागत रैंकिग फ्रेमवर्क में संस्थान ने देश की सभी इंजीनियरिंग संस्थानों में 28 वें स्थान से 23 वें स्थान पाया है । इन संस्थानों में "शिक्षण एवं अधिगम संसाधन" के लिए आईआईएसटी ने शीर्षस्थ 10 में स्थान पाया है।

आईआईएसटी के छात्रों को कैल्टेक (गैलसिट) कैलिफॉनिया, सं.रा.अ., जेपीएल, सं.रा.अ., मिटास ग्लोबलिंक फाउन्डेशन, कैनडा तथा स्विनबर्न यूनिवर्सिटी ऑफ टेकनॉलजी, ऑस्ट्रेलिया जैसे विदेशी विश्वविद्यालयों में अनुसंधान प्रशिक्षुता करने के लिए उत्कृष्ट अवसर मिले।

अनुसंधान गतिविधियाँ

अनुसंधान इस प्रतिष्ठित एवं अद्वितीय संस्थान के परिकल्पित लक्ष्यों का अभिन्न अंग है। सभी विभाग राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय महत्व के परियोजनाओं एवं अनुसंधान में लगे हुए हैं। आईआईएसटी संकाय सदस्यों के अनुसंधान कार्य को विविध योजनाओं के तहत आगे बढ़ाने के लिए अपने संसाधनों के मुख्य हिस्से का उपयोग करता है। वे हैं - नव नियुक्त संकाय सदस्यों के अनुसंधान कार्यों के लिए फास्ट ट्रैक परियोजनाएँ, डीन (अनुसंधान व विकास), प्रगत अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी विकास कक्ष (एएसटीडीसी) तथा बाहरी रूप से वित्तपोषित परियोजनाओं के नेतृत्व में आईआईएसटी अनुसंधान परिषद द्वारा समन्वित आईआईएसटी परियोजनाएं तथा आईआईएसटी - इसरो परियोजनाएं। ।

आईआईएसटी का प्रारंभ इसरो में मानव संसाधन की बढ़ती हुई मांग को पूरा करने तथा प्रगत अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में अनुसंधान के संबंध में इसरो से सहयोग बनाने के लिए मंच प्रदान करने के उद्देश्य से किया गया था। इस लक्ष्य की ओर संस्थान के संकाय सदस्यों द्वारा कई आईआईएसटी - इसरो परियोजनाएं शुरू की गई हैं ताकि प्रमोचक वाहनों, प्रदायभार एवं प्रगत उपग्रह तंत्रों से संबंधित अंतरिक्ष मिशनों के लिए प्रौद्योगिकी की पहचान एवं विकास कर सकें।

पिछले वर्ष राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय महत्व के कई वक्ताओं ने संस्थान का दौरा किया। ऐसे व्याख्यान वैज्ञानिक अधिगम का संवर्धन करने तथा संस्थान का बौद्धिक वातावरण सृजित करने के लिए मंच प्रदान करते हैं। सतत शिक्षा की जिम्मेदारी निभाते हुए संस्थान सम्मेलनों एवं कार्यशालाओं के अलावा परिसर में उपलब्ध विशेषज्ञता के बल पर औद्योगिक प्रतिष्ठानों एवं शैक्षिक संस्थाओं से उद्दिष्ट प्रतिभागियों को विशेषज्ञता के क्षेत्रों में नियमित रूप से अल्पकालिक पाठ्यक्रम भी प्रदान करता है। पिछले वर्ष आईआईएसटी ने अंतरिक्ष विज्ञान, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी, संस्कृति एवं मानविकी के विविध क्षेत्रों में राष्ट्रीय स्तर की कई कार्यशालाओं एवं सम्मेलनों का आयोजन किया।इनमें छात्रों एवं शोधकर्ताओं ने सक्रियता से भाग लिया।

छात्र गतिविधियां

पाठ्यक्रम संबंधी गतिविधियों के साथ साथ संस्थान खेलकूद और सांस्कृतिक कार्यकलापों पर भी काफ़ी जोर देता है। डीन (छात्र गतिविधियां) के अधीन कार्यरत छात्र गतिविधि बोर्ड, छात्रों के विविध कार्यकलाप एवं कल्याण से संबंधित गतिविधियां संभालता है। मार्च 2018 में 'कॉन्सेन्शिया 2018' नामक दसवां वार्षिक प्रौद्योगिकी एवं खगोल विज्ञान उत्सव का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन श्री. पी. कुंञिकृष्णन निदेशक, शार ने किया। अक्तूबर 20-23, 2017 को 'धनक 2017' का आयोजन किया गया जिसमें 40 घटनाएं थीं। इन कार्यक्रमों में आईआईएसटी से बाहर के 900 से अधिक छात्रों ने भाग लिया। इसका उद्घाटन प्रसिद्ध नर्तकी डॉ. मेथिल देविका ने किया। आईआईएसटी ने अप्रैल 08 व 09, 2017 को 50 प्रतिभागियों के साथ मॉडल संयुक्त राष्ट्र (एमयूएन) तथा 'कॉन्कोड्स' नामक अंतर महाविद्यालय संगीत एवं नृत्य कार्यक्रम का भी आयोजन किया। एमयूएन आईआईएसटी के लोकप्रिय कार्यक्रमों में से एक है। सामाजिक बहिरंग कार्यक्रम - 'निर्माण' के अधीन आसपास के बच्चों के लिए उपचारी कक्षाएं चलाई जाती हैं। आईआईएसटी में स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, विश्व पर्यावरण दिवस, संकाय सदस्य, स्टाफ़ एवं छात्रों के लिए लिगं संवेदनशीलता कार्यक्रम, स्वच्छ भारत अभियान तथा होली, ओणम, ईद जैसे त्योहार भी मनाए गए।

संस्थान को अपनी आगे की यात्रा में ओर ऊंचाइयों को जीतना है और गौरव प्राप्त करना है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हम एक अनूठी संस्था के रूप में मिलकर काम करेंगे। हमारा लक्ष्य यह है कि भविष्य में यह संस्थान राष्ट्रीय स्तर का अनुसंधान केंद्र बन जाए ।

इस अंक में

आपके जीवन की गठरी हल्की है	9
आस्था और अंधविश्वास	10
छठा दीक्षांत समारोह	11
गणित के जादूगर	12
स्वच्छता पखवाडा	13
धरती माँ	14
मनग्रहण	15
डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम व्याख्यान माला का संस्थापन	16
सामाजिक अस्तित्व	17
भारत रत्न डॉ. भीमराव रामजी आंबेडकर की 127वीं जयंती समारोह	18
समाज में पर्व त्योहारों का महत्व	20
शुक्र है शिक्षक हूँ	22
भारत में शिक्षा की स्थिति	23
गिरती मानविकता (हिंदीतर भाषी प्रवर्ग में कविता रचना में प्रथम पुरस्कार प्राप्त कविता)	25
गिरती मानविकता (हिंदी भाषी प्रवर्ग में कविता रचना में प्रथम पुरस्कार प्राप्त कविता)	27
हाथी की रस्सी	28
सुविचार	29
फोटोग्राफी	30
नवागत कार्मिकों का हार्दिक स्वागत	34
वर्ष 2018 के दौरान आईआईएसटी में आयोजित विविध हिंदी कार्यक्रम	35
आपकी प्रतिक्रिया	41

आपके जीवन की गठरी हल्की है !

(सफलता हासिल करने के चक्कर में कभी खुद को न भूले)

अर्णव ताम्रकार
SC15B160
बी.टेक.इंजीनियरी भौतिकी
चौथा वर्ष

जीवन में कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो अपनी पुरानी विफलताओं या गलतियों को ही याद करते रहते हैं और जिंदगी में आगे नहीं बढ पाते। ऐसे लोगों ने अपने जीवन को बहुत भारी बना लिया है। वे जिंदगी का बोझ उठाते - उठाते थक गए हैं। वे हर व्यक्ति से जुडी नकरात्मक बातें ही करते हैं। वे जिंदगी में मौज-मस्ती करना भूल गए हैं। अगर जीवन में आपसे कोई भूल हो गई हो तो उसे खुद पर चिपकाने के बजाए आपको ईश्वर से माफ़ी मांग लेनी चाहिए। इससे आप खुद को माफ़ भी कर पाएंगे और हल्का भी महसूस करेंगे।

अगर आपको अभी तक अपनी मनचाही चीज नहीं मिली है तो दुखी होने की जरूरत नहीं है। सबसे पहले अपनी क्षमताओं पर गौर करें। इसके बाद देखें कि आपके पास जो चीजें पहले से मौजूद हैं, क्या आप उनका मजा कर पा रहे हैं। अगर आप जिंदगी को पूरी ऊर्जा और संतुष्टि के साथ जी रहे हैं, तो आगे भी आपके सपने पूरे होंगे। अगर आप बेवजह दुखी और चिडचिड़े बनेंगे तो जो आपके पास है, वो भी चला जाएगा। इसलिए जो आपके पास है उसका जश्न मनाना भी जरूरी है। इससे जीवन की परेशानियां कम होती है और आगे की जिंदगी आसान बनती है। मन में किसी भी तरह की गाँठ न बांधे। इससे मन बिना बात के मुरझाने लगता है। जीवन को हल्के - फुल्के अंदाज में जिएं। अगर किसी ने आपको भला-बुरा कह दिया तो हो उसे माफ कर दें या उससे दूर हो जाएं। उसकी बातों को मन से लगाकर रखने से या गुस्सा करने से आपकी सकारात्मकता खत्म होने लगती है और उसके जैसे बनने लगते हैं।

जिंदगी में खुद को पॉजिटिव बनाए रखना जरूरी है। ज्यादातर इंसान मानते हैं कि जो भी उनके पास है वो सब उनकी मेहनत के कारण है। इसके बजाय आपको ईश्वर, कुदरत और अपने आस-पास के लोगों को धन्यवाद देना चाहिए क्योंकि उनकी मदद के कारण आप अपनी मौजूदा जगह पर पहुँचे है।

अगर आप जीवन भर हर किसी से कुछ न कुछ बटोरते रहेंगे तो आप जिंदगी को बोझ बना लेंगे। इसे हल्का बनाने के लिए आपको दूसरों की मदद करनी चाहिए, जितना हो सके दूसरों को देना चाहिए। आप दूसरों को ज्ञान भी दे सकते हैं, खुश कर सकते हैं, या समस्या सुलझा सकते हैं। इस तरह आप खुद अपनी जिंदगी का बोझ कम कर सकते हैं।

मुकुल पटेरिया
पृथ्वी एवं अंतरिक्ष विज्ञान विभाग

आस्था और अंधविश्वास

हमारे भारत का एक अनूठा इतिहास रहा है कि हम बहुत ज्यादा आस्तिक है। किन्तु इसी परिप्रेक्ष्य में पश्चिमी देश हमें अंधविश्वासी मानते हैं। हमारी पूजा, अज़ान, भक्ति करने के तरीकों को अगर कोई अंधविश्वास से जोड़ता है तो उससे मुझे आपत्ति है और आगे भी रहेगी।

किंतु पिछले कुछ सालों में भक्ति का रूपांतरण इस तरीके से हुआ है कि लोग तथाकथित 'बाबाओं', 'साधुओं' पर कुछ ज्यादा ही समर्पित हो चुके है। इसे मैं अंधविश्वास की श्रेणी में रखता हूँ।

हमारे सामने कई उदाहरण है कि 'बाबाओं' और 'साधुओं' ने हमारे देश की संस्कृति को बचा के रखा है। परंतु इस बात को भी नज़र अंदाज नही किया जा सकता है कि कई 'साधुओं' से अपमान जनक कार्य हुए है।

हमारी उच्चतम न्यायालय जिसे यह सिद्ध करने के लिए करीब 15 वर्ष लग जाते हैं कि कोई बाबा 'दुष्कर्म' भी कर सकता है। इस न्याय को सुनकर लोग अपना मानसिक संतुलन खो देते हैं। यही लोग अंधविश्वासी है, नाकि पूजा-पाठ या अज़ान करने वाला।

मेरी गुजारिश बस इतनी है कि अगर आप किसी पर पूर्ण रुप से भरोसा करते हो (यह आपका दृढ़विश्वास है) तो कालांतर में यह बदल सकता है और इसे स्वीकार करने की क्षमता होनी चाहिए। अगर आप इसे नहीं स्वीकारते हैं तब यह आपका अंधविश्वास ही होगा नाकि आपकी आस्था। निश्चय आपको करना है आस्तिक बनें या अंधविश्वासी बनें।

उपरोक्त विचार, तत्कालीन निर्णय जोकि उच्चतम न्यायालय ने दिया 'बाबा राम रहीम' 'डेरा सच्चा सौदा' प्रमुख को 15 वर्ष की जेल के लिए से प्रेरित है। इसमें लेखक अपनी व्यथा प्रकट कर रहा है कि 'बाबा राम रहीम' के अनुयायियों ने किस तरह हरियाणा में तोड़-फोड़ की जिससे 30 लोगों की जान गई।

छठा दीक्षांत समारोह

संस्थान का छठा दीक्षांत समारोह जुलाई 18, 2018 बुधवार को अपराह्न तीन बजे वीएसएससी, तिरुवनंतपुरम के डॉ. श्रीनिवासन श्रोता कक्ष में आयोजित किया गया। दीक्षांत समारोह की अध्यक्षता संस्थान के माननीय कुलाधिपति ने की। **प्रो. के विजयराघवन, प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार, भारत सरकार** इस समारोह के मुख्य अतिथि रहे। श्री. एस. सोमनाथ, निदेशक, वीएसएससी, सम्मान्य अतिथि रहे। समारोह का विधिवत प्रारंभ शोभायात्रा के आगमन से हुआ। ईशवंदना के बाद डॉ. बी. एन. सुरेश, माननीय कुलाधिपति, आईआईएसटी ने दीक्षांत समारोह आरंभ होने की घोषणा की।

संस्थान के निदेशक डॉ. विनय कुमार डढवाल ने स्वागत भाषण दिया और संस्थान की रिपोर्ट प्रस्तुत की जिसमें संस्थान की उज्वल उपलब्धियों और भावी विकास की योजनाओं का वर्णन किया गया। श्री. एस. सोमनाथ, निदेशक, वीएसएससी, सम्मान्य अतिथि, डॉ. बी. एन. सुरेश, माननीय कुलाधिपति एवं डॉ. के. शिवन, अध्यक्ष, शासी निकाय,आईआईएसटी व अध्यक्ष, इसरो तीनों के भाषणों के पश्चात, छात्रों को उपाधियां प्रदान की गईं। प्रौद्योगिकी स्नातक की उपाधि 111 बी.टेक. छात्रों को, प्रौद्योगिकी निष्णात की उपाधि 63 एम.टेक. छात्रों को तथा पीएचडी की उपाधि 19 शोधकार्ताओं को दी गई।

पदवी दान के बाद सभी छात्रों ने शपथ ग्रहण किया। शपथ ग्रहण समारोह के बाद **प्रो. के विजयराघवन,** मुख्य अतिथि ने संस्थान के उत्कृष्टता पदक प्रदान किए। सर्वोत्तम शैक्षिक निष्पादन तथा समस्त सर्वश्रेष्ठ छात्र के लिए स्वर्ण पदक और तीनों स्नातक कार्यक्रमों के सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले छात्र को स्वर्ण पदकों का वितरण भी इस समारोह के दौरान किया गया।

इसके बाद **प्रो. के विजयराघवन** मुख्य अतिथि ने दीक्षांत भाषण दिया। मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में संस्थान के प्रयासों की प्रशंसा की और शिक्षा से जुड़े मानदंडों के पालन के लिए बधाई दी। माननीय कुलाधिपति ने दीक्षांत समारोह के संपन्न होने की घोषणा की। राष्ट गान के बाद शैक्षिक शोभायात्रा की वापसी के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

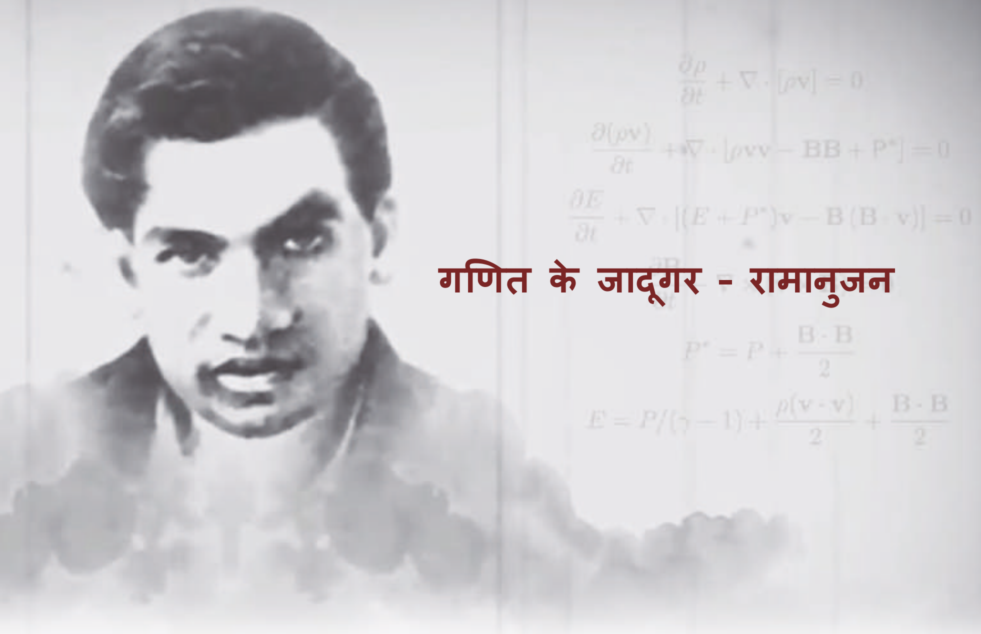

गणित के जादूगर - रामानुजन

शिवांशी गुप्ता
SC16B135
बी.टेक. इंजीनियरी भौतिकी
तीसरा वर्ष

जुनून जब हद से गुज़रता है, तो जन्म होता है रामानुजन जैसी शख़्सियत का। स्कूली शिक्षा भी पूरी न कर पाने के बावजूद वे दुनिया के महानतम गणितज्ञों में शामिल हो गए। उन्होंने गणित के ऐसे सूत्र दिए जिन्हें समझ लेने पर आपको कैंब्रिज यूनिवर्सिटी से पीएचडी की उपाधि आसानी से मिल सकती है।

22, दिसबंर 1887 को मद्रास के छोटे से गांव ईरोड में जन्मे श्रीनिवास रामानुजन के पिता कपड़े की फैक्ट्री में क्लर्क थे। आर्थिक स्थिति ठीक न होने के बावजूद पिता बच्चे की परवरिश के लिए कुंभकोणम शहर आ गए। हाईस्कूल तक रामानुजन सभी विषयों में अच्छे थे पर गणित के प्रति उनकी रुचि धीरे-धीरे बढ़ती गई और उनको दूसरे विषयों की क्लास बोरिंग लगने लगी। वे अन्य कक्षाओं में भी गणित के सवाल हल करते रहते थे। इस कारण दसवीं कक्षा के पश्चात उनके अन्य विषयों में अंक काफी कम आने लगे और उनसे स्कॉलरशिप छीन ली गई। फेल होने के बाद स्कूल की पढाई रुक गई।

अब पढाई जारी रखने के लिए वे बच्चों को ट्यूशन पढाने लगे। इससे उन्हें पाँच रूपये महीने में मिल जाते थे। पर गणित का जुनून मुश्किलें बढ़ा रहा था। कुछ समय बाद दोबारा बारहवीं कक्षा की प्राइवेट परीक्षा दी, लेकिन वे एक बार फिर फेल हो गए। उनके जीवन में उस समय निराशा थी। ऐसे में दो चीज़े हमेशा रहीं पहला ईश्वर पर अटूट विश्वास और दूसरा गणित का जुनून। शादी के बाद परिवार का खर्च चलाने के लिए वे नौकरी की तलाश में जुट गए। पर बारहवीं में फेल होने के कारण उन्हें नौकरी नहीं मिली। उनका स्वास्थ्य भी गिरता जा रहा था। किसी के कहने पर वे श्री. वी. रामस्वामी अय्यर से मिले और उन्हें अपने गणित पर किए गए कार्य दिखाए। यहाँ पर श्री अय्यर ने जो खुद एक गणितज्ञ थे, उनकी प्रतिभा को पहचाना और उनके लिए 25 रुपये मासिक छात्रवृत्ति का प्रबंध कराया। उन्हें मद्रास पोर्ट ट्रस्ट में क्लर्क की नौकरी भी मिल गई। वे रात भर जागकर गणित के नए- नए सूत्र तैयार करते थे। यह सिलसिला रुकने के बजाय और तेज़ होता गया। इसी दौरान वे इंडियन मैथमैटिकल सोसाइटी के गणितज्ञों के संपर्क में आए और एक गणितज्ञ के रूप में उन्हें पहचान मिलने लगी।

ज्यादातर गणितज्ञ उनके सूत्रों से चकित तो थे, लेकिन वे उन्हें समझ नहीं पाते थे। पर तत्कालीन विश्वप्रसिद्ध गणितज्ञ जी. एच हार्डी ने उनकी प्रतिभा को पहचाना। यहाँ से उनके जीवन में एक नए युग का सूत्रपात हुआ। उन्होंने रामानुजन को कैंब्रिज आने के लिए आमंत्रित किया और आर्थिक सहायता भी दिलवाई। अपने एक विशेष शोध के कारण वहाँ उन्हें बी. ए. की उपाधि मिली, लेकिन वहाँ की जलवायु और रहन सहन में वे ढल नहीं पाए। उनका स्वास्थ्य और खराब होता गया।

वे रॉयल सोसायटी के सबसे कम आयु के सदस्य बने। यह गुलामी भारत में एक बहुत बात थी। इसके पश्चात वे ट्रिनिटी कॉलेज की फेलोशिप पाने वाले प्रथम भारतीय भी बनें। करना बहुत कुछ था, लेकिन स्वास्थ्य ने साथ देने से इनकार कर दिया था। डॉक्टरों की सलाह पर वे भारत लौटे। बीमार हालत में भी उच्चस्तरीय शोध पत्र लिखा। परंतु मौत की घडी तेज हो रही थी और अंततः 26 अप्रैल, 1920 को वह शोक की घड़ी आई जब वे सदा के लिए सो गए। 33 साल की युवा आयु में वे गौस, यूलर, जैकोबी, जैसे सर्वकालीन महानतम गणितज्ञों की पंक्ति में शामिल हो गए।

स्वच्छता पखवाडा

संस्थान में स्वच्छता पखवाडा **फरवरी 12 से फरवरी 23, 2018** तक आयोजित किया गया। हाल ही में संस्थापित नॉ वेस्ट इन्सिनिरेटर का लोकार्पण करते हुए निदेशक महोदय ने इसका औपचारिक उद्घाटन किया। निदेशक ने अदिति मेस के छत पर आईआईएसटी कैन्टीन सेवा द्वारा बनाए गए सब्ज़ियों के बगीचे का निरीक्षण किया। उन्होंने इस प्रयास की सराहना की। पखवाडे के भाग के रूप में निकटतम स्कूलों में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया ।

फरवरी 13, को संस्थान के कुछ छात्रों ने निकटतम अनाथालय का दौरा किया और वहाँ के निवासियों को स्वच्छता एवं सफाई संबंधी कार्यों के बारे में अवगत कराया।

फरवरी 14 को संस्थान के सफाई कर्मचारियों के लिए केरल राज्य स्वछता मिशन के पद्धारियों द्वारा जागरूकता कार्यक्रम का संचालन किया गया।

फरवरी 15 को संस्थान के छात्रों के लिए 'इको हाईजीन' विषय पर निबंध लेखन प्रतियोगिता चलाई गई ।

फरवरी 16 को संस्थान से फेंके जाने वाले कचड़े का आंकड़ा विश्लेषण किया गया तथा संस्थान से जनित रासायनिक अपशिष्टों के निपटान के बारे में परिचर्चा और समीक्षा की गई। संस्थान में ऊर्जा उपयोग एवं दक्षता के ऊपर भी अध्ययन किया गया।

फरवरी 17 को छात्रों के लिए पेपर बैग तथा कैरी बैग बनाने के बारे में कक्षा आयोजित की गई । छात्रों के लिए स्थानीय बाजारों में अपशिष्ट प्रबंधन के लिए अभिनव प्रौद्योगिकियां विषय पर मार्केट सर्वे प्रतियोगिता चलाई गई ।

फरवरी 18 को होस्टल सफाई दिवस के रूप में मनाया गया। उस दिन सभी छात्रों ने अपने अपने कमरे तथा सामान्य क्षेत्रों की सफाई की।

फरवरी 19 को आईआईएसटी कैन्टीन में बयोगैस स्लरी का उपयोग करते हुए रसोई बाग की स्थापना की गई।

फरवरी 20 को ग्रीन प्रोटोकॉल का कार्यान्वयन किया गया।

फरवरी 21 को निकटतम स्कूलों के छात्रों के लिए प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गई । उसी दिन संस्थान के छात्र, संकाय एवं कर्मचारीगण अपने अपने कक्षाओं, कार्यालयों, प्रयोगशालाओं तथा अपने विभाग के बाकी क्षेत्रों की सफाई की। विविध भवनों तथा बाह्य परिसरों की सफाई बखूबी से की गई।

फरवरी 22 को पूरे परिसर की सफाई भी की गई। सभी संकाय सदस्यों, छात्रों, शोधछात्रों तथा स्टाफ़ सदस्यों ने सफाई कर्मियों के साथ अपने अपने परिसर की साफ-सफाई के काम में बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। यह ऐसा सामूहिक प्रयत्न था जिसमें व्यक्तियों के मैत्री भाव एवं उत्तरदायित्व का परिचय दिया।

मार्च 16 को स्वच्छता पखवाड़े के समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह में निबंध लेखन प्रतियोगिता, स्कूली छात्रों के लिए प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, शार्ट फिल्म प्रतियोगिता, मार्केट सर्वे प्रतियोगिता आदि के विजेताओं को पुरस्कार तथा सभी होस्टल कमरों का मूल्यांकन करने पर उत्तम होस्टल कमरा पुरस्कार भी प्रदान किए गए।

धरती माँ

मनीष जी. एस.
पुस्तकालय सहायक

प्रस्तावना

मातृभूमि तो माता के समान है। जिस प्रकार माता से हमारा अटूट प्रेम होता है उसी प्रकार अपने देश के प्रति हमारा प्रेम अटल होता है। इसीलिए वेद में कहा गया है - 'नमो मातृ भूम्यै, नमो मातृ भूम्यै'। सचमुच माता और जन्मभूमि स्वर्ग से बढ़कर होती है। मेरा देश धार्मिक विविधता से भरा देश है। हिंदू, सिख, बौद्ध, जैन, ईसाई, मुस्लिम आदि धर्मों को यहां समान दृष्टि से देखा जाता है। भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है। महान हिमालय से रक्षित तथा पवित्र गंगा से सिंचित हमारा भारत एक स्वतंत्र आत्मनिर्भर देश है।

देश प्रेम ही देश की उन्नति का परम साधना है। देश-प्रेम की भावना से पूर्ण व्यक्ति ही देश की उन्नति में सहायक होते हैं। देश की मान मर्यादा की रक्षा के लिए वे अपने सर्वस्व बलिदान करने को तत्पर रहते हैं। वही सच्चा देश भक्त है जो देश की रक्षा और स्वतंत्रता के लिए तथा देश में प्रचलित कुरीतियों को दूर करने केलिए अपना बलिदान देता है।

अब हमारे देश की स्थिति बड़ी चिंताजनक है। हमारे पड़ोसी देश पाकिस्तान और चीन ने अपनी गिद्ध-दृष्टि हमारे राष्ट्र की स्वतंत्रता और भूमि को हड़पने के लिए लगा रखी है। ऐसी स्थिति में हममें देश-प्रेम की भावना का होना नितांत आवश्यक है।

देश भक्ति का प्रभाव

देश के प्रति भक्ति रखने वाले व्यक्ति अपने देश के हित को सर्वोपरि समझते हैं। देश की भालाई के लिए अपना हित छोडने के लिए सदैव तैयार रहना चाहिए।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमारे देश-प्रेम का अवमूल्यन हो गया है। हमारे देशवासियों में विदेशी वस्तुओं, विदेशी संस्कृति तथा विदेशी भाषा का आकर्षण बढ़ गया है तथा हमारे युवा वर्ग में देश की मिट्टी के प्रति लगाव नहीं दिखाई देता है। देश भक्ति से देश की हर वस्तु, व्यक्ति, साहित्य, संस्कृति यहाँ तक कि उसके कण-कण से प्यार करने का तात्पर्य है।

शहीदों की याद

भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु, चंद्रशेखर आज़ाद जैसे अनेक युवक प्राण हथेलियों पर रखते हुए सत्ता के खिलाफ़ लड़े। देश के स्वतंत्रता संग्राम में महात्मा गाँधी के नेतृत्व में असंख्य लोग अपना सब कुछ बलिदान कर दिया। इससे स्पष्ट है कि सच्चा देश भक्त देश के लिए जीता है और देश के लिए मरता है।

उपसंहार

भारत के नागरिकों को आशा है कि मेरा देश फिर से अपने प्राचीन गौरव को हासिल कर सकेगा और एक दिन विश्वगुरू बनेगा। जिस देश में गंगा बहती है, वही भारतवर्ष मेरा देश है। हमारे मन और मुँह से देश के प्रति एक ही शब्द निकलना चाहिए - भारत माता की जय, भारत माता की जय।

उत्तम जोदावत

SC15B055

बी.टेक. वांतरिक्ष इंजीनियरी विभाग

चौथा वर्ष

मनग्रहण :

मैं कोई तारा नहीं, मैं तो सूरज हूँ |

फिर क्यों है ये अंधेरा ?

क्यों है ग्रहण सा! क्यों ?

छाए हैं गुब्बारे धुल के,

बिखरे हैं काले बद्दल,

तेज है आंधी जो बहा ले जाए जन को

शायद इसीलिए है अंधेरा ? नहीं ! ये आत्म अंधेरा

सूरज तब भी चमकता है, कैसे ?

भले चले धूली की आंधी ,

फिर भी लोचन खुले रहें|

पहाड़ों से पत्थर गिरे ,

फिर भी कदम चलते रहें |

जगती आँखे हैं चलते कदम हैं

फिर भी ग्रहण है!

हाँ,ग्रहण हैं काले मन का ,

थकते तन का,चुभते गम का

तब तो थम जाएगी सांसे

आखिर ग्रहण कब हटेगा !

जब मन भरा होंगा, उम्मीदों से

उसी उत्साह, उसी संकल्प से

नहीं रुकेंगे फ़र्राट कदम, मन होंगा चमकदम

हा यहीं वह क्षण होंगा,जब मन ग्रहण का अंत होंगा ||

डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम व्याख्यान माला का संस्थापन

एक महान विचारक, विद्वान, विज्ञानविद और उच्च कोटि के मनुष्य, मिसाइल मैन कहे जाने वाले डॉ. ए. पी. जे अब्दुल कलाम भारतीय मिसाइल प्रोग्राम का जनक हैं। संस्थान ने अपने प्रथम कुलाधिपति डॉ. ए. पी. जे अब्दुल कलाम की पावन स्मृति में अप्रैल 04, 2018 बुधवार को सुबह 11.00 बजे डॉ. विनय कुमार सारस्वत, सदस्य नीति आयोग के व्याख्यान के साथ डॉ. ए. पी. जे अब्दुल कलाम व्याख्यान माला का संस्थापन किया। संस्थान के माननीय कुलाधिपति डॉ. बी. एन. सुरेश एवं वीएसएससी के निदेशक श्री. एस. सोमनाथ की उपस्थिति ने समारोह की शोभा बढाई। कार्यक्रम प्रारंभ होने से पहले डॉ. ए. पी. जे अब्दुल कलाम को श्रद्धांजलि देते हुए छात्रों द्वारा बनाया गया वीडियो का प्रदर्शन किया गया। वीडियो प्रदर्शन के बाद समारोह का प्रारंभ ईशवंदना से हुआ।

निदेशक, आईआईएसटी ने स्वागत भाषण दिया जिसमें इसरो के अन्य केंद्रों से पधारे विशिष्ट व्यक्तियों का भी स्वागत किया गया। श्री. एस. सोमनाथ, निदेशक, वीएसएससी ने आशीर्वचन और माननीय कुलाधिपति डॉ. बी. एन. सुरेश ने अध्यक्षीय भाषण दिया। उन्होंने कहा कि डॉ. विजय कुमार सारस्वत भारत के सबसे प्रतिभाशाली वैज्ञानिक और कुशल अनुसंधाता हैं जिन्हें रक्षा अनुसंधान के मौलिक और अनुप्रयुक्त विज्ञानों के विभिन्न क्षेत्रों और विषयों में चार दशक से भी अधिक समय का अनुभव है। वर्तमान में डॉ. सारस्वत नीति आयोग का सदस्य हैं और सरकार तथा शैक्षिक संस्थानों में अनेक अवैतनिक पदों के दायित्व का निर्वहण कर रहे हैं। उनके ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायी भाषण के बाद सभी विशिष्ट व्यक्तियों ने दीप प्रज्वलित करके व्याख्यान माला का संस्थापन अंकित किया। इस व्याख्यान माला का उद्घाटन व्याख्यान के रूप में डॉ. वी. के. सारस्वत ने **'इंजीनियरी की नई सीमाएं'** विषय पर प्रस्तुतीकरण दिया। उन्होंने अपने व्याख्यान में कैसे प्रौद्योगिकियों को सामाजिक हित के लिए उपलब्ध कराया जा सकता है, इसके ऊपर प्रभावशाली प्रस्तुति दी।

उद्घाटन व्याख्यान के उपरांत संस्थान के छात्रों एवं संकाय सदस्यों के साथ डॉ. सारस्वत जी का संवाद हुआ जिसमें उन्होंने श्रोताओं की शंकाओं का समाधान किया।

व्याख्यान और संवाद सत्र के बाद माननीय कुलाधिपति ने शॉल पहनाकर डॉ. सारस्वत जी का सम्मान किया तथा उनको प्रशस्ति पत्र प्रदान किया। हमारे निदेशक डॉ. वी. के डढ़वाल जी ने व्याख्यानदाता को स्मृति चिन्ह भेंट की तथा संस्थान की बी.टेक. छात्रा कुमारी काव्या ने उनकी एक सुंदर तस्वीर खुद बनाकर उपहार के तौर पर दी जिससे वे बहुत प्रसन्न हुए।

माननीय कुलसचिव एवं डीन (शैक्षिकी) डॉ. ए. चंद्रशेखर जी ने धन्यवाद ज्ञापन दिया और राष्ट्र गान के साथ यह समारोह संपन्न हुआ। भारत को गौरान्वित करने वाले महापुरुष के नाम से संस्थापित व्याख्यान माला का जीवंत प्रसारण की व्यवस्था भी कंप्यूटर तंत्र ग्रुप ने की।

दीपक गोपाल कृष्णन
पीएचडी
पृथ्वी एवं अंतरिक्ष विज्ञान विभाग

सामाजिक अस्तित्व

बहुत पहले हममें से कुछ,

एक जंगली यात्रा पर गए।

इस यात्रा पर हमने कई कठिनाइयों का सामना किया,

उसी समय हमें एक आदमी मिला।

उस आदमी ने हमारी मदद की, रास्ते को ढूंढ़ने में,

रात्रि में हम सो रहे थे, और वह हम पर नज़र रख रहा था।

अंत में हम अपने गंतव्य में पहुंच गए, सुरक्षित रूप से,

और हमने उसे मार डाला, एक साथ मिल कर।

अब हम उस क्षण को याद करते हैं कि

यदि वह हमारे साथ न होता तो हम गंतव्य तक न पहुँच पाते।

भारत रत्न डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर की 127 वीं जयंती समारोह

भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान में 'भारत रत्न' डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर का जन्म दिवस और उनके योगदान को याद करने के लिए 18 अप्रैल 2018 को उनकी 127 वीं जयंती समारोह मनाया गया। इस दिन संस्थान के सभी छात्रों, कर्मचारियों एवं संविदा कर्मचारियों के लिए विशेष भोजन दिया गया। मध्याह्न भोजन के बाद सेमिनार हॉल में सब सम्मिलित हुए। इस समारोह में डॉ. अनंतकुमार एस, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक, राष्ट्रीय अंतर्विषयी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, तिरुवनंतपुरम मुख्य अतिथि रहे।

कार्यक्रम का प्रारंभ ईशवंदना से हुआ। डॉ. कुरुविळा जोसफ़, डीन (छात्र गतिविधियां) ने स्वागत भाषण दिया। हमारे निदेशक महोदय डॉ. विनय कुमार डढ़वाल ने अध्यक्षीय भाषण दिया जिसमें उन्होंने इस दिवस की अहमियत तथा भारत रत्न डॉ. बी. आर. अंबेडकर की जीवनी पर प्रकाश डाला ।

इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ. अनंतकुमार एस. ने विशेष भाषण दिया। उनके भाषण के दौरान कहे गए मुख्य बिंदुओं पर यह रिपोर्ट प्रकाश डालती हैं। उन्होंने सबसे पहले डॉ. बी. आर. अंबेडकर के जीवन की मुख्य घटनाओं के बारे में सभा को अवगत कराया तथा इस बिंदु पर विशेष बल दिया कि अगर हम डॉ. बी. आर. अंबेडकर के जीवन पर प्रकाश डाले, तो एक बात स्पष्ट है कि उन्होंने कभी कोई भी अवसर खोने नहीं दिया। एक ऐसा संदेश है जिसे हमें अपनी जिंदगी में अपनाना चाहिए।

भारत में अवसरों की कोई कमी नहीं है। भारत सरकार युवा इंजीनियरों और विद्वानों के लिए अधिक से अधिक अवसरों का सृजन करती है। इसका सबसे अच्छा उदाहरण इनक्युबेशन सेन्टर और स्टार्ट अप है। युवा इंजीनियरों को यह ठान लेना चाहिए कि वे कभी भी भारत से बाहर जाकर नौकरी नहीं करेंगे बल्कि भारत में ही नौकरी करेंगे और दूसरों को नई नौकरियां प्रदान करेंगे। विश्व बैंक ने यह घोषणा की कि भारत को 8.1 मिलियन नौकरियां प्रदान करनी है। यह तभी संभव होगा जब भारत के स्वंय प्रेरित प्रतिभाशाली युवक आगे आयेंगे ।

उन्होंने इस बात पर जोर डाला कि हम सबको अपने चारों ओर देखना चाहिए और सही अवसरों का प्रयोग करना चाहिए। इस बात की पुष्टि उन्होंने खुद की जिंदगी का उदाहरण देते हुए कहा कि 1992 में सीएसआईआर में कार्यारंभ करने के बाद उन्हें विदेशी विश्वविद्यालय से पीएचडी करने के लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय से फैलोशिप मिली। वे आल्फ्रेड यूनिवर्सिटी सं.रा.अ. में कार्बन फाइबर मैट्रिक्स कंपोजिट्स पर कार्य करने के लिए गए। बाद में उन्हें सिरेमिक कंपोज़िट्स के क्रीप बिहेवियर पर कार्य करने के लिए हैम्बर्ग-हाबर्ग जर्मनी के तकनीकी विश्वविद्यालय से डीएएडी फैलोशिप मिली। पीएचडी पूरा करने के बाद, उन्हें थर्माइलेक्ट्रिक मैटीरियलों पर कार्य करने के लिए सीएनआरएस फ्रांस में पोस्ट डॉक्टरल अनुसंधान अवसर मिला। वहाँ वे अपने आचार्य के साथ मिलकर इन्सुलेटर अनुप्रयोगों के लिए सिलिकन पोलिमर आधारित द्वि विद्युत का

प्रतिस्थापन करने के लिए उच्च तापीय चालकता इपोक्सी द्वि विद्यत का विकास करने की शोध परियोजना में कार्य किया । उन्होंने आगे कहा कि वैज्ञानिक हमेशा नए अवसरों की तलाश करते हैं। सेवा में प्रवेश करने के बाद उन्होंने आदित्य बिरला, श्नीडर इलेक्ट्रिक, अरेवा टी एवं डी, नोरिटेक, बिनानी ज़िंक, इंग्लिश इंडियन क्लेज़, कार्बोरेन्डम यूर्निवर्सल जैसे बारह से अधिक उद्योगों के साथ काम किया।युवा इंजीनियरों के लिए यह भी महत्वपूर्ण है कि उनको अपने संकाय के साथ मिलकर काम करना चाहिए और इस बात पर उन्होंने संकाय सदस्यों के बारे में विशेष रूप से उल्लेख किया कि उन्हें छात्रों को सही रास्ता दिखाने के लिए स्वयं अद्यतित रहना है। मुख्य रूप से भारत में एवं विदेशों में हो रहे निवेश, अवसंरचनाएं एवं नए व्यापारों के बारे में खास जानकारी होनी चाहिए। फिर उन्होंने विविध वित्तपोषण एजेन्सियों द्वारा स्थापित वैज्ञानिक अवसरों की ओर श्रोताओं का ध्यान आकर्षित किया। भारत सरकार के पास कई मिशन मोड परियोजनाएं हैं। जब वे सेवा आंरभ किए तो 90 के दशक की शुरुआत में पराचालकता सामग्रियों पर अनुसंधान हो रहा था। बाद में वैज्ञानिक क्षेत्रों में आईटी, जैव प्रौद्योगिकी एवं नैनो प्रौद्योगिकी विकसित हुई। आज सौर ऊर्जा पर अनुसंधान का अवसर है। इसके अलावा, स्वच्छ और सुरक्षित पेयजल, कृषि आवश्यकताओं के लिए पानी इसके ऊपर काफ़ी अनुसंधान की आवश्यकता है। इसी प्रकार सरकार भी भारत के प्रमुख शहरों में वायु प्रदूषण से हो रही समस्याओं का समाधान करने में विशेष रूप से रुचि रखती है। हाल ही में सीएसआईआर से वैषिक आतिशबाजी के जगह पर विकल्प खोजने के लिए कहा गया था।

उन्होंने श्रोताओं का ध्यान भविष्य का खतरा 'जलवायु में हो रहे तेज परिवर्तन' की ओर आकर्षित किया। पूरा देश असहनीय गर्म मौसम का अनुभव कर रहा है। सामान्य वायुमंडलीय तापमान 38-40 डिग्री के करीब पहुंच रहा है। यह एक बड़ी चिंता का विषय है और वे कूल पिगमेन्ट्स एवं कूल-पेइन्ट्रस का विकास करने के लिए ऊष्मा कवचन सेरामिक पिगमेन्ट्स एवं विलेपनों के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं।

उस क्षेत्र में आईआर प्रतिबिंबित सिलिकेट सामग्रियों का विकास करने के लिए उद्योगों के साथ काम करने हेतु उनको दो परियोजनाएं भी मिली हैं। इस पर उनका शोध कार्य हो रहा है। वे इस बात से भी अवगत है कि इसरो के अध्यक्ष ने आईआईएसटी के शोधकर्ताओं को 'कम लागत वाली अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी' विकसित करने की बड़ी चुनौती को पूरा करने हेतु आगे आने का आग्रह किया है। यह वैश्विक स्तर पर सोचने तथा देश को ऊंचाई पर ले जाने के लिए एक टीम के रूप में कार्य करने का सही समय है और यही डॉ. बी. आर अंबेडकर सहित महान नेताओं का सपना था।

उन्होंने अपना भाषण यह कहते हुए समाप्त किया कि विज्ञान एवं तर्कसंगत सोच को अस्थित्व एवं आर्थिक पुनरुत्थान का आधार बनाकर बीसवीं शताब्दी के दलित नेता डॉ. बी. आर. अंबेडकर ने स्वतंत्र आधुनिक भारत में अपने समुदाय के लिए एक सम्मानजनक जगह बनाने की कोशिश की। यही कारण है आज हम ऐसे समारोह का आयोजन करके उनका सम्मान कर रहे हैं। हम हमेशा उनके जन्मदिवस पर ही नहीं बल्कि हमारे जीवन के हर दिन और हर पल इस महान नेता को याद करने में खुशी महसूस करते हैं। प्रेरणादायक भाषण के बाद हमारे निदेशक डॉ. वी. के डढ़वाल जी ने मुख्य अतिथि को स्मृति चिन्ह भेंट की। श्री. सतीश कुमार वी. के धन्यवाद ज्ञापन के साथ इस कार्यक्रम का समापन हुआ ।

अरुणिता कुमारी
SC14B142
एम.टेक. प्रकाशिक इंजीनियरी

सामाज में पर्व-त्योहारों का महत्व

भारत को यदि त्योंहारों का देश कहा जाए तो गलत नहीं होगा। जितने त्योंहार यहाँ मनाए जाते हैं उतने शायद ही किसी और देश में मनाए जाते होंगे।

त्योहार एक इंसान के जीवन में अलग ही अहमियत रखता है । यह इंसान के नीरस जीवन में खुशियों का रस भरता है। आजकल लोग अपनी दिनचर्या में इतने व्यस्त हो गए हैं कि उन्हें अपने और अपने परिवार के लिए समय ही नहीं मिलता। ऐसे में त्योहार उन्हें आम दिनचर्या से निकालकर अपनों के संग समय व्यतीत करने का अवसर प्रदान करता है।

त्योहार हमारे भारत की संस्कृति का अटूट हिस्सा है। यह सदियों से चली आ रही परंपरा का प्रतीक है। त्योहार भारत के परिवारों की एक पीढ़ी को दूसरी पीढ़ी से जोड़ता है। यह हमारे संस्कृति को जीवित रखता है और दर्शाता है कि भारत एक ऐसा रंगीन देश है जहाँ सालभर होली, दीपावली, दशहरा, ईद, क्रिसमस आदि त्योहार पूरे हर्ष और उल्लास से साथ मनाए जाते हैं। यह दुनिया को भारत का एक सकारात्मक चेहरा प्रस्तुत करता है। त्योहार हमारे इतिहास का आईना है और हमें हमारे मूल्यों से जोड़ता है। भारत में अलग अलग प्रकार के हजारों त्योहारों को मनाया जाता है जोकि हमारे देश के विभिन्न संस्कृति को दर्शाता है। त्योहार हमारी संस्कृति की धरोहर है।

विभिन्न त्योहार यह दर्शाते हैं कि भारत अनेकता में एकता का प्रतीक है। भारतीय इतिहास में कई समृद्ध राजाओं ने शासन किया। राजवंशी, मुगल इत्यादि अपने - अपने तौर - तरीके हमें त्योहारों के रूप में विरासत में देकर गए हैं। यह दर्शाता है कि भारत दूसरी संस्कृति को लेकर कितना सहनशील है और नए विचारों का पूरे दिल से स्वागत करता है।

त्योहार पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर पर हमें एकता के अनोखे धागे में बाँधते हैं। चाहे कोई इनसान कितना ही व्यस्त क्यों न हो वह त्योहार के मौके पर अपने परिवार के साथ अवश्य होता है। इससे परिवार वालों में मानवीय भावना और प्रेम और भी मज़बूत हो जाता है। यदि कोई अपने परिवार से दूर रहकर काम या पढ़ाई करता है तो त्योहारों पर घर वापस जरूर जाता है। इससे पारिवारिक एकता की गाँठ और भी कस कर बंध जाती है। त्योहार एक ऐसा मौका है जब इनसान आपसी भेद-भाव और मन-मुटाव भुला

कर साथ में खुशी मनाता है। अतः त्योहार दो दिलों को साथ लाते है। त्योहारों का सांस्कृतिक मूल्य बहुत है, इसलिए इनका बच्चों पर बहुत उत्तम प्रभाव पड़ता है। इन त्योहारों द्वारा वे अपनी संस्कृति एवं धर्म से अवगत हो जाते हैं।

भारत में हर त्योहार खुशी और जश्न के साथ मनाया जाता है। चाहे वह होली हो या ईद, दीपावली हो या क्रिसमस। सभी समुदाय के पर्व के समय देश में हर्षोल्लास देखने को मिलता है। एक हिंदू भी मुस्लिम को ईद के मौके पर "ईद मुबारक" बोलना नहीं भूलता। हर कोई क्रिसमस के दिन बेसब्री से सैन्टा का इंतजार करता है और तोहफों से एक दूसरे को प्रसन्न करते हैं। चाहे उसका कोई भी मज़हब हो, होली के रंग में सभी रंगते हैं। अतः त्योहार हमारे भारत के विभिन्न समुदाय रूपी मोतियों को एक धागे में पिरोकर सुंदर सी माला बनाता है। इसलिए भारत विश्व प्रसिद्ध है और दूसरे देशों के नागरिक यह हसीन दृश्य देखने के लिए यहाँ आते हैं और अचंभित रह जाते हैं।

यहाँ पर राष्ट्रीय त्योहार जैसे गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस आदि भी मनाए जाते हैं जो पूरे भारत में हर नागरिक को उसके इतिहास के अद्भुत लम्हों की याद दिलाते हैं। जब प्रधानमंत्री हमारे देश का झंडा लाल किले पर फहराते हैं तो सभी भारतीयों के दिल से एक ही आवाज निकलती है- "मेरा भारत महान"। ये सभी त्योहार हमें हमारे पूर्वजों की याद दिलाते हैं, जिन्होंने इस देश की स्वतंत्रता के लिए न जाने कितने बलिदान दिए । ये हमें हमारे इतिहास का स्मरण करवाते हैं और हमें हमारी स्वतंत्रता का कद्र करना भी सिखाते हैं। ये राष्ट्रीय त्योहार भारत को उत्तर में जम्मू-कश्मीर से दक्षिण में कन्याकुमारी और पूर्व में अरुणाचल प्रदेश से पश्चिम में राजस्थान तक जोड़कर रखते हैं। ये हमारी मातृभूमि के प्रति हमारे प्रेम को और भी गाढ़ा बनाते हैं।

त्योहार हमारे जीवन में नैतिकता का भी पाठ पढ़ाते हैं। ये हमें अपने दिनचर्या में आने वाली कठिनाईयों का सामना करने की भी सीख देते हैं। दीपावली हमें सिखाती है कि हर अंधेरे का अंत आशा के प्रकाश से होता है। दशहरा हमें बताता है कि असत्य की हमेशा हार होती है और सत्य सदैव विजयी होता है। कई पर्वों को फसल की बुआई और कटाई के समय मनाते हैं जैसे लोहड़ी, मकर संक्रांति आदि। इससे हमें अपने अन्न का सम्मान करने की सीख मिलती है। त्योहारों पर कई दान-धर्म के कार्य किए जाते हैं जिसमें पडितों को दक्षिणा दी जाती है। इससे समाज में नैतिक मूल्यों का प्रसार होता है। अनुज अपने बड़ों का आशीर्वाद लेते हैं और आभार व्यक्त करते हैं। हर दीपावली पर अपने घर की साफ़ सफाई की जाती है ताकि लक्ष्मी घरों में प्रवेश करें। इसी कारणवश स्वच्छता का भी ध्यान रखा जाता है और बीमारियाँ दूर होती हैं। इससे समाज स्वच्छ एवं सेहतमंद रहता है। होली नए साल के रूप में मनाई जाती है। करवाचौथ पर जब पत्नी अपने पति की लंबी उम्र की कामना करते हुए पूरा दिन उपवास करती है तो उनके बीच का प्रेम और बढ़ जाता है। त्योहार हमें सहनशील भी बनाते हैं। सारे रस्म-रिवाज़ को निभाते समय हम नियमों का पालन करना सीखते हैं।

त्योहारों पर आधारित कई कविताएं और कथाएं भी प्रचलित हैं। इससे हमारे काव्य साहित्य और भी रोचक हो जाते हैं।

यदि यह कहा जाए कि भारत में त्योहार हर किसी के जीवन का मूल है तो यह गलत नहीं होगा। अतः हमें सारे त्योहारों को उनकी अहमियत समझ कर अवश्य मनाना चाहिए। इससे हमारा जीवन और भी सुखमय और रोचक हो जाएगा।

दीपक मौर्य
SC16M014
एम. टेक. संरचनाएं व अभिकल्पन
दूसरा वर्ष

"शुक्र है शिक्षक हूँ"

नेता नहीं, एक्टर नहीं, रिश्वत खोर नहीं,
शुक्र है शिक्षक हूँ, कुछ और नहीं...
न मैं स्पाइसजेट में घूमने वाला गरीब हूँ,
न मैं किसी पार्टी के करीब हूँ ...
कभी राष्ट्रीयता की बहस में मै पड़ता नहीं...
मैं जन धन का लूटेरा या टैक्स चोर नहीं
शुक्र है शिक्षक हूँ, कुछ और नहीं...
न मेरे पास मंच पर चिल्लाने का वक्त है,
न मेरा कोई दोस्त अफज़ल, याकूब का भक्त है...
न मुझे देश में देश से आजादी का अरमान है,
न मुझे 2-4 पोथे पोथे पढ़ लेने का गुमान है ...
मेरी मौत पर गंदी राजनीति नहीं, कोई शोर नही,
शुक्र है शिक्षक हूँ, कुछ और नहीं...
मेरे पास मैडल नहीं वापस लौटाने को
नकली आंसू भी नहीं बेवजह बहाने को...
न झूठे वादे हैं, न वादा खिलाफी है,
कुछ देर चैन से सो लूँ इतना ही काफी है...
बेशक खामोश हूँ, मगर कमज़ोर नही,
शुक्र है शिक्षक हूँ, कुछ और नहीं...
मैं और सड़क एक जैसे कहलाते हैं
क्योंकि सबको मंजिल तक पहुँचाते हैं,
रोज़ वही कक्षा, वही बच्चे, पर होता मैं कभी बोर नहीं,
शुक्र है शिक्षक हूँ, कुछ और नहीं...

हरीश सिंह धामी
एम.टेक. रसायन विभाग

भारत में शिक्षा की स्थिति एवं अपेक्षित सुझाव

शिक्षा किसी भी राष्ट्र एवं समाज के आर्थिक, सामाजिक एवं प्रौद्योगिक विकास का आधार होती है। किसी भी राष्ट्र के विकास का आकलन उसके शिक्षित एवं कुशल मानव संसाधनों से किया जा सकता है।

हमारे देश की वर्तमान शिक्षा पद्धति की नींव 1835 ई में ब्रिटिश शासनकाल में लार्ड मैकाले ने रखी। उस समय अंग्रेजी शासन ने अपनी प्रशासन व्यवस्था को चलाने तथा अपने अनुरूप कामगारों को बनाने हेतु एक ऐसी शिक्षण व्यवस्था बनाई जोकि पाश्चात्य शिक्षण व्यवस्था से प्रेरित थी। इस संबंध में 18वीं एवं 19 वीं सदी में बढते प्रौद्योगिकी एवं उसको चलाने हेतु श्रमिकों की आवश्यकता ने महत्वपूर्ण प्रभाव डाला। शिक्षा मुख्यतः केवल उच्च वर्ग के समाज तक ही सीमित थी। विगत 200 वर्षों से वही शिक्षण प्रणाली दुर्भाग्यपूर्ण ढ़ंग से प्रचलन में है।

1945 ई. तक हमारे देश की साक्षरता केवल दस प्रतिशत थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् हमारे देश के संविधान निर्माताओं तथा नीति निर्धारकों ने अवश्य इस विषय को समझा कि शिक्षा राष्ट्र के विकास का अभिन्न पहलू है। इस बात का आकलन हम शिक्षा कानून (1944), कोठारी आयोग (1966) तथा नई शिक्षा नीति (1987) से कर सकते हैं। भारतीय शिक्षा प्रणाली में राष्ट्र भाषा हिंदी की महत्ता को गांधीजी 1917 में गुजरात एजुकेशन सोसायटी में दिए भाषण से समझा जा सकता है। उन्होंने काशी विद्यापीठ एवं विश्व हिंदी परिषद् की महत्ता को बखूबी तार्किक ढ़ंग से लोगों तक पहुंचाया।

यद्यपि प्रत्येक 10 वर्षों में शिक्षा पद्धति में बदलाव किया जाता है, परंतु उसका मूलभूत ढाँचा आज भी केवल जीविकोपार्जन एवं रोजगार पाना मात्र रह गया है।

वर्तमान शिक्षा पद्धति मशीनीकरण एवं प्रौद्योगिकी को बढावा देने मात्र रह गई है। जिसका एकमात्र उद्देश्य बस अंक अर्जित करना तथा नौकरी पाना रह गया है। प्रत्येक विद्यार्थी इस होड में पढा जा रहा है कि कैसे वह अपने पडोस वाले व्यक्ति से बेहतर नौकरी पाए। यद्यपि प्रतिस्पर्धा आवश्यक है, परंतु व्यक्तित्व एवं चरित्रनिर्माण विहीन शिक्षा प्रणाली एक दिखावटी एवं खोखले समाज का निर्माण करती है। व्यावहारिक एवं प्रायोगिक ज्ञान रहित शिक्षा एक अशांत एवं अकुशल शिक्षितों की भीड़ बढा रही है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली के मुख्यतः सात शत्रु हैं- मस्तिष्क, दण्ड, अधिक कार्य, स्वाभिमान हीन शिक्षक, लालची अभिभावक, परीक्षाएं एवं नौकरी पाना मात्र। बालक के तर्कशक्ति के विरुद्ध उसे किसी भी अनुभाग में शिक्षा दिलाने मात्र एवं जैसे तैसे नौकरी की होड में लग जाने वाली शिक्षा पद्धति वास्तव में

असल भारतीय शिक्षा पद्धति नहीं है। आज यद्यपि विद्यार्थी बहुत सारे विषयों का अध्ययन कर रहा है परंतु व्यावहारिक ज्ञान उसका एक भी विषय में नहीं है। यह युवाओं में सबसे बड़ी अशांति का कारण है जोकि अंततः किसी सामाजिक बुराई एवं आत्महत्या को जन्म देती है।

वास्तव में, शिक्षा देने वाले शिक्षको में भी आज स्वाभिमान की कमी है। शिक्षा एक व्यवसाय एवं विद्यार्थी मात्र 'उत्पाद' बन गया है। जिसे बस बाजार में जैसे तैसे बेचा जाए। सिखाया यह जाता है कि 'क्या करना है'? बल्कि होना यह चाहिए था कि 'कैसे करना है'? आज शिक्षण एक व्यवसाय मात्र रह गया है। अध्यापक केवल पैसा देखना चाहता है।

शिक्षण व्यवस्था शोध एवं अनुसंधान को नजरअंदाज कर रही है। क्रियात्मकता एवं नवीकरण की सोच भी विद्यार्थी को भयभीत कर देती है कि नौकरी पाना मुश्किल हो जाएगा।

शिक्षा व्यवस्था तीन प्रारूपों में दी जानी चाहिए। शारीरिक शिक्षा, मानसिक शिक्षा एवं आध्यात्मिक शिक्षा। शारिरीक शिक्षा में व्यक्ति को क्या खाना, कितना खाना आदि मूलभूत बातों को बताया जाना चाहिए। मानसिक शिक्षा विद्यार्थी के तार्किक स्थिति के अनुरूप क्रियात्मक एवं नवीकरण व सृजनात्मक होनी चाहिए, जो व्यक्ति को कुछ नया सोचने को प्रेरित करें। आध्यात्मिक शिक्षा में व्यक्ति के चरित्रनिर्माण, देशप्रेम, समाजहित, न्याय, करुणा, दया, शक्ति, क्षमा, आदि अत्यन्त महत्वपूर्ण गुणों का समावेश करने वाली होनी चाहिए। आज आवश्यकता यह है कि सरकार एवं समाज के लोग यह समझें कि शोध एवं अनुसंधानों पर व्यय किया जाना चाहिए। यद्यपि आज साक्षरता 71 प्रतिशत हो गई है, परंतु आज भी प्राथमिक विद्यालयों की हालत जर्जर है, एक भवन एवं एक शिक्षक। शिक्षा का निजीकरण एवं उदारीकरण चर्चा का विषय है, इसमें भी अन्त में हानि भावी समाज को होगी। तो आवश्यकता है कि देश के अग्रणी शिक्षण संस्थान इस प्रक्रिया में अपनी भागीदारी एवं उत्तरदायित्व समझें।

उच्चतर शिक्षा प्राप्त युवाओं, वैज्ञानिकों, इंजीनियरों एवं डाक्टरों का पलायन भी चिन्ता का कारण है जोकि सरकारी नीतियों एवं व्यवस्थाओं के कुप्रबंधन को दर्शाता है। इस विषय में नीति निर्धारकों को पुनः चिन्तन करने की आवश्यकता है। इस संदर्भ में शिक्षा को समवर्ती सूची में डालना हाल ही में अवश्यक चर्चा का विषय है, जिससे केंद्र सरकार एकमत से सभी राज्यों में एकसमान शिक्षा पद्धति प्रस्तुत करेगा। परंतु राज्यों को भी इस विषय में सोचने की आवश्यकता है।

शिक्षा का मूलभूत उददेश्य एक कुशल, चरित्रवान, उदारवादी एवं रोजगारोन्मुखी व्यक्तित्व का विकास करना है जोकि राष्ट्रभाव व देशप्रेम की भावना से भरा हो, जिसका उद्देश्य समाज का सतत् विकास निस्वार्थ भाव से करना हो। तभी एक समृद्ध शक्तिशाली एवं विकसित राष्ट्र का निर्माण संभव है, जोकि संपूर्ण मानवजाती का हित होगा। सा विद्या या विमुक्तये!

गिरती मानविकता

अरुणिता कुमारी
SC14B142
एम.टेक. प्रकाशिक इंजीनियरी

हाय! यह क्या हुआ समाज को,
मनुष्य खोलो अपनी आँखें और देखो।

मृत पड़ा जा रहा है कोई,
सबकी चेतना है फिर भी सोई।

कहाँ है मानवता का वो उठा हुआ सर?
जिस पर होता था सभी को फक्र

तुमने ही तो कभी यह नियम बनाए,
कि प्राण जाए पर वचन न जाएं।

फिर क्यों यह घड़ी आन पड़ी है?
अश्रुपूर्ण मानवता तुम्हारे समक्ष खड़ी है।

अपने नयनों में लिए अनगिनत सवाल,
संभलो! नहीं तो हो जाएगा बवाल।

क्या नहीं दिखता तुम्हें दूसरों का दुख?
क्या इतना महत्वपूर्ण हो गया है अपना सुख?

कम क्यों हो रहा है मनुष्य का ईमान?
जहाँ देखो वही दिखता है बेईमान।

कब तुम यह बात समझोगे?
कब अपनी आदत सुधारोगे?

अपने आंसूओं से चेतना अपना हाल है कह रही,
फिर भी मुख बंद कर सब है सह रही।

ऐ मेरे दाता! रहम कर
इंसान में थोड़ी इंसानियत भर।

जागो ऐ मनुष्य! नहीं तो भीषण संकट आएगी,
जन्मों - जन्मों तक जो तुम्हें रुलाएगीं।

अभी भी समय है संभल जाओ,
अपनी गलतियों को मान जाओ।

करलो अपने पूर्वजों का सम्मान,
रख लो उनके सीख की आन।

नहीं तो तुम्हारे अस्तित्व पर आयेगा ऐसा संकट,
निकल पाना उससे होगा कार्य विकट।

अपनी गरिमा को एक मौका तो दो,
अपने दिल को खुल कर जीने तो दो।

वादा है मेरी सफलता तुम्हारे कदम चूमेंगी,
खुशियां तुम्हारे आंगन में झूमेंगी।

एक गरीब की ओर नज़र उठाकर तो देखो,
बेसहारे को सहारा देकर तो देखो।

किसी और के लिए जीकर तो देखो,
किसी को बिना मतलब हँसा कर तो देखो।

मन प्रफुल्लित हुआ नहीं होगा पहले इतना कभी,
अपने से लगेंगे फिर तुम्हें सभी।

खाली हाथ आए हो और खाली हाथ जाओगे,
दूसरों को दुख देकर तुम क्या पाओगे?

एक ही तो जीवन जीना है,
फिर कुटिलता का रस क्यों पीना है?

माना कि जिंदगी है एक कठिन डगर,
हिम्मत भी तो रख सकते हो तुम मगर।

एक बेसहारा तुमको जो दुआ देगी,
हर सिक्के से ज्यादा कीमत उसकी होगी।

अपनी आत्मा को मुक्त कर दो,
मानविकता को एक मौका दे दो।

गिरती मानविकता

शिवांगी शर्मा
बी.टेक. वांतरिक्ष इंजीनियरी विभाग

ओ ऊपरवाले, ऐसी क्या तेरे मन में आई
क्या सोचके इंसानों की सृष्टि बनाई
भगवान ऐसा आ गया है अब जमाना
कुत्ता बाँट लेगा अपना खाना
लेकिन आदमी से कोई आशा न लगाना।

यहाँ तो पेट में मार दी जाती है कन्या
और यदि आ जाए संसार में तो पाती है सिर्फ शोषण और जीवित हत्या
इंसान ही इंसान को काटता है, बेचता है
और रहता है मग्न अपनी ही तू-तू मैं-मैं में
इंसान को मारने के लिए जाने कितने औजार बनाए
लेकिन इतना प्रयास ना कर पाएं कि एक दूसरे को समझ जाएं।

भाई भाई का दुश्मन है पैसे और ज़मीन के लिए
लेकिन क्या सिर्फ रोटी ओर छत ज़रूरी है जीने के लिए?
क्यों भूल जाते हैं हम आपसी प्यार और सदाचार
मानवता कर रही है हर क्षण चित्कार
प्रभु दूर करो इस संसार से अंधकार
अब नहीं सहन होता, करो कुछ चमत्कार।

परिवार से होती गायब मूल्य आधारित शिक्षा
क्यों नहीं लेता कोई जीवन जीने की कक्षा?
जिन माँ-बाप ने चलना सिखाया
उन्हें वृद्धाश्रम में रखने का नियम किसने बनाया?

चलचित्रों पर सिर्फ दिखाते प्रेम के नाम पर नग्नता
अच्छाई के नाम पर आ गई है समाज में शून्यता
ऐ! मालिक इस संसार में कैसे होगा बेड़ा पार
कंधे देने के लिए भी ना मिल पाएंगे लोग चार

इस मनुष्य को कब समझ आएगा
एक एक कौड़ी का हिसाब लिया जाएगा
प्रकृति एक एक पत्ती का भी बहिखाता रखती है
जब तांडव करती है तो किसी की नहीं सुनती है।

अब भी संभल जा प्यारे
इससे पहले कि इंसान सबकुछ हारे

शुभम अग्रवाल
SC17M078
एम. टेक. भू-सूचना विज्ञान
दूसरा वर्ष

हाथी की रस्सी

एक आदमी हाथी के शिविर के पास से जा रहा था। उसने देखा कि हाथियों को पिंजरों में नहीं रखा गया था और ना ही चेन से बांधा गया था, बल्कि उन्हें भागने से रोकने के लिए सिर्फ एक छोटी सी रस्सी के टुकड़े से बांधा गया था जिसे हाथी बड़े आराम से तोड़ सकते थे। लेकिन फिर भी हाथी रस्सी को तोड़ने की बिलकुल भी कोशिश नहीं कर रहे थे। इस बात से वह आदमी बहुत ही ज्यादा अचंभित हो गया और इस प्रश्न का उत्तर जानने के लिए वह हाथी के महावत के पास गया।

महावत ने बताया कि जब हाथी बहुत छोटे थे तब उनको इसी तरह की रस्सी से बांधा जाता था लेकिन तब वे उस रस्सी को नहीं तोड़ पाते थे क्योंकि वे बहुत छोटे थे। इसलिए उन्होंने ये सोच लिया था कि वे इस रस्सी को कभी नहीं तोड़ सकते वो सोच उनकी अब तक बनी हुई है और इसीलिए अब वे रस्सी को तोड़ने की कोशिश भी नहीं करना चाहते।

किसान की कठिनाई

एक किसान शहर से दूर अपने घर में रहता था। उस के घर में किसी प्रकार की कमी नहीं थी, लेकिन फिर भी वह किसान खुश नहीं था। उसे लगता जैसे यह गाँव एक जंगल है और वह इस में बहुत अकेला है। एक दिन उसने अपने गांव के घर को बेचकर शहर में एक आलीशान बंगला लेने का निश्चय किया और अपने एक दोस्त को शहर से बुलाया जो मकानों की खरीद-फरोख्त का काम करता था। किसान ने उससे कहा कि मेरा यह घर बेचकर मुझे शहर में एक अच्छा सा मकान दिला दो। उसके दोस्त ने उससे पूछा, भाई तुम ये अपने पूर्वजों का इतना सुन्दर घर क्यों बेचना चाहते हो ? कोई समस्या है या पैसो की कुछ जरुरत है तो मुझे बताओ। किसान ने अपने दोस्त की बात सुनकर उससे कहा - यह घर शहर से कई किलो मीटर दूर है। यहाँ पर शहर की तरह पक्की सड़कें नहीं हैं, सारे रास्ते ऊबड़ खाबड़ हैं। यहाँ इतने सारे पेड़ पौधे लगे हैं, जब हवा चलती है तो घर में पत्ते पत्ते हो जाते हैं, सफाई करने में भी कठिनाई होती है। ये पहाड़ देखो, सर्दियों में इनपर बर्फ गिर जाती है, जिससे बड़ी कठिनाई होती है। अब बताओ मैं कैसे रह पाऊँगा इस घर में। उसके दोस्त ने कहा - ठीक है मैं जल्दी ही तुम्हारा घर बिकवा दूंगा। ऐसा कह कर वह चला गया। अगले दिन वह किसान सुबह अख़बार पढ़ रहा था, तभी उसने अख़बार में एक घर का विज्ञापन देखा। विज्ञापन में लिखा था, शहर की भीड़ भाड़ से दूर, पहाड़ियों से घिरे हुए, ताजी हवा से परिपूर्ण एक सुन्दर घर में बसाओ अपने सपनो का घर। किसान को वह विज्ञापन बहुत पसंद आया। उसने उस घर को खरीदने के मन बना लिया। उसने जब दिए गए नंबर पर फ़ोन किया, तब वह यह जान कार हैरान रह गया, यह तो उसी के घर का विज्ञापन है। अब वह समझ गया कि वह तो पहले से ही अपने पसंद के घर में रह रहा है। अब वह खुश हुआ। उसने जल्दी से अपने दोस्त को फोन करके अपने घर को बेचने से मना कर दिया।

नितेश वर्मा
SC16D027
पीएचडी
गणित विभाग

सुविचार

"पक्के हुए फल की तीन पहचान होती है ...

एक तो वह नर्म हो जाता है

दूसरा वह मीठा हो जाता है

तीसरा उसका रंग बदल जाता है"

"इसी तरह से परिपक्व व्यक्ति की भी तीन पहचान होती है ...

पहली उसमें नम्रता होती है...

दूसरी उसकी वाणी में मिठास होती है

तीसरा उसके चेहरे पर आत्मविश्वास का रंग होता है.."

सुविचार

सब्र और सच्चाई, एक ऐसी सवारी है,

जो अपने सवार को कभी गिरने नहीं देती,

ना किसी के कदमों में और ना किसी की नज़रों में

अभय जैन
वरिष्ठ सहायक

फोटोग्राफी

नीतु एम.
SC17M041
एम. टेक. एविओनिकी
दूसरा वर्ष

फोटोग्राफी

फोटोग्राफी

पिरुत्वी चेंदुर पी.
SC17M042
एम. टेक. एविओनिकी
दूसरा वर्ष

फोटोग्राफी

शुभम अग्रवाल
SC17M078
एम. टेक. भू-सूचना विज्ञान
दूसरा वर्ष

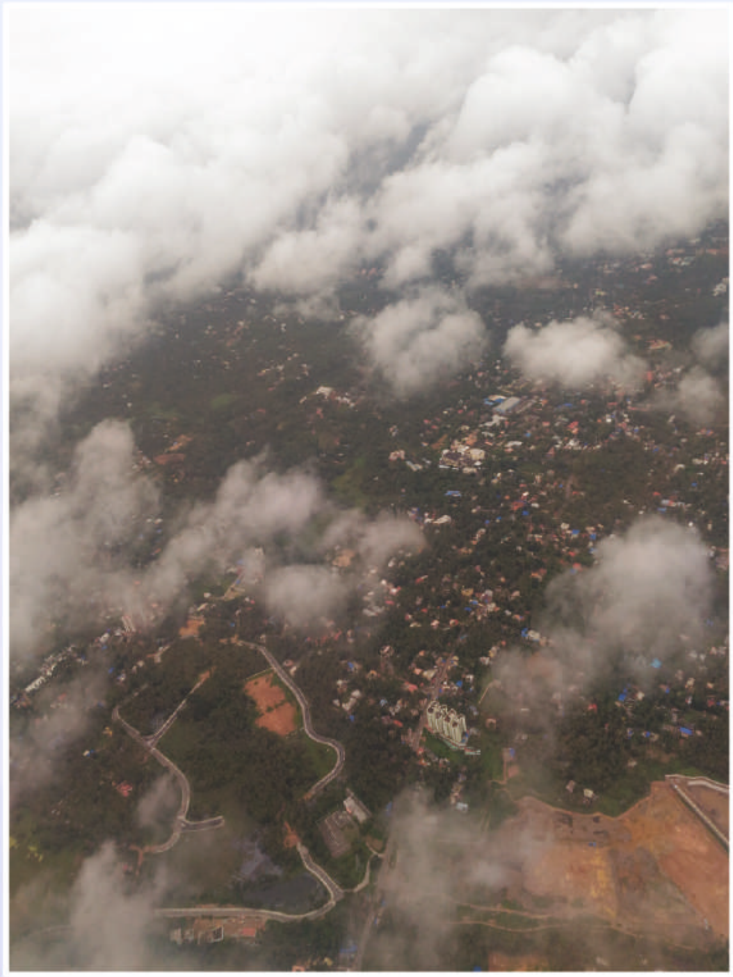

नवागत कार्मिकों का हार्दिक स्वागत

डॉ. देवेन्द्र प्रकाश घाटे
सहायक आचार्य
वांतरिक्ष इंजीनियरी विभाग
कार्यारंभ - 02.06.2017

डॉ. ए. एम. रम्या
सहायक आचार्य
पृथ्वी एवं अंतरिक्ष विज्ञान विभाग
कार्यारंभ 04.12.2017

डॉ. विनीत बी. एस.
सहायक आचार्य
एविओनिकी विभाग
कार्यारंभ 14.06.2017

डॉ. बासुदेव मज़ूमदार
सहायक आचार्य
एविओनिकी विभाग
कार्यारंभ 27.12.2017

डॉ. एस. क्रिस प्रेमा
सहायक आचार्य
एविओनिकी विभाग
कार्यारंभ 01.12.2017

श्री. एम. वी. ढ़ेकणे
प्रोफसर सतीश धवन प्रोफसर
कार्यारंभ 09.04.2018

डॉ. आर. दयालन
सहायक आचार्य
वांतरिक्ष इंजीनियरी विभाग
कार्यारंभ 01.12.2017

डॉ. वाई. वी. एन. कृष्ण मूर्ति
वरिष्ठ आचार्य
कार्यारंभ 14.09.2018

वर्ष 2018 के दौरान आईआईएसटी में आयोजित विविध हिंदी कार्यक्रम

1. विश्व हिंदी दिवस समारोह 2018

विश्व हिंदी दिवस समारोह - 2018 के उपलक्ष्य में हिंदी में विविध प्रतियोगिताएं चलाई गईं। संस्थान के छात्रों तथा कर्मचारियों ने अलग अलग वर्गों के लिए निर्धारित प्रतियोगिताओं में भाग लिया। जनवरी **26** को इससे संबंधित **पुरस्कार वितरण समारोह** का आयोजन किया गया। प्रतियोगिताओं के विजेताओं को निदेशक महोदय द्वारा नकद पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र वितरित किए गए।

2. हिंदी माह का आयोजन

संस्थान में सितंबर 03 से 28 तक हिंदी माह मनाया गया । इस सिलसिले में विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया । **सितंबर 03 को** हिंदी सोफ्टवेयर प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया गया । हिंदी दिवस के महत्व को उजागर करने के उद्देश्य से सितंबर 14 को **हिंदी दिवस व्याख्यान** का आयोजन भी किया गया । **केरल विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. आर. जयचंद्रन** ने व्याख्यान दिया। हिंदी माह समारोह - 2018 के उपलक्ष्य में संस्थान के कर्मचारियों के लिए **सितंबर 04, 05, व 21, 2018** को तथा छात्रों के लिए **सितंबर 10, 11, 12 व 13, 2018** को विविध हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। नवंबर **30, 2018** को **पुरस्कार वितरण समारोह** आयोजित किया गया। प्रतियोगिताओं के विजेताओं को निदेशक महोदय द्वारा नकद पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र वितरित किए गए।

3. संस्थान के अधिकारियों / कर्मचारियों के लिए हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन

I. कार्यपालकों के लिए हिंदी कार्यशाला

संस्थान के कार्यपालकों के लिए **मार्च 12, 2018** को एक अर्ध दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 20 कार्यपालकों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। इस कार्यशाला का औपचारिक उद्घाटन डॉ. ए. चंद्रशेखर, कुलसचिव, आईआईएसटी द्वारा किया गया। इस सत्र का संचालन श्री. एम जी. सोम शेखरन नायर, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी ने किया। उन्होंने **राजभाषा कार्यान्वयन में कार्यालय अध्यक्ष एवं उच्च अधिकारियों की भूमिका** विषय पर विस्तृत व्याख्यान दिया।

ii) तकनीकी क्षेत्र के कर्मचारियों के लिए

संस्थान के तकनीकी क्षेत्र के कर्मचारियों के लिए **13 व 14 जून, 2018** को दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें 20 कर्मचारी उपस्थित रहे। श्री. ए. सोमदत्तन, पूर्व उप निदेशक, आयकर विभाग ने **हिंदी की संरचना** विषय पर एवं डॉ. हरींद्र शर्मा, सहायक निदेशक (रा.भा.) दूरदर्शन केंद्र ने **राजभाषा हिंदी का मानक स्वरूप** विषय पर व्याख्यान दिए। श्री. आर. जयपाल, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, आईआईएसटी ने **कंप्यूटर के सहारे राजभाषा हिंदी में कार्य कैसे करें**, इस विषय पर कर्मचारियों से अभ्यास भी कराया। श्री. एम जी. सोम शेखरन नायर ने **हिंदी में वैज्ञानिक व तकनीकी शब्दावली** विषय पर प्रायोगिक कक्षा चलाई। कमचारियों ने बड़ी सक्रियता से कक्षा में भाग लिया।

iii) संकाय सदस्यों के लिए हिंदी कार्यशाला

संकाय सदस्यों के लिए सितंबर 12 को हिंदी कार्यशाला चलाई गई । इस कार्यशाला का औपचारिक उद्घाटन डॉ. ए. चंद्रशेखर, कुलसचिव, आईआईएसटी द्वारा किया गया। डॉ. एन. सुरेश, निदेशक, अनुवाद व अनुवाद अध्ययन केंद्र, केरल विश्वविद्यालय ने **भारत सरकार की राजभाषा नीति: बुनियादी बातें** विषय पर विस्तृत व्याख्यान दिया। इसमें 11 संकाय सदस्यों ने भाग लिया। डॉ. सुरेश ने बहुत ही सरलता से इस विषय को प्रस्तुत किया।

iv) प्रशासनिक क्षेत्र के सहायकों के लिए हिंदी कार्यशाला

संस्थान के सहायकों, वरिष्ठ सहायकों, वैयक्तिक सहायकों तथा लिपिक वर्ग के संविदागत कर्मचारियों के लिए 20 व 21 दिसंबर को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 29 कर्मचारी उपस्थित रहे। श्रीमती आर. महेश्वरी अम्मा, हिंदी अधिकारी, आईआईएसयू तिरुवनंतपुरम ने **राजभाषा नीति कार्यान्वयन- अद्यतन आदेश / निर्धारित लक्ष्य** तथा श्री. ए. सोमदत्तन, पूर्व उप निदेशक, आयकर विभाग ने **हिंदी में टिप्पण एवं आलेखन** विषय पर अभ्यास कराया । श्री. आर. जयपाल, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, आईआईएसटी ने **कंप्यूटर के सहारे राजभाषा हिंदी में कार्य'** विषय पर कक्षा का संचालन किया। उन्होंने प्रतिभागियों को कंप्यूटर पर टंकण कैसे करें, इसका भी अभ्यास कराया तथा विविध ई - टूल्स का परिचय भी दिया । श्री. एम. जी. सोम शेखरन नायर, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी ने हिंदी की प्रशासनिक शब्दावली एवं उसके प्रयोग विषय पर प्रायोगिक कक्षा चलाई।

सभी प्रतिभागियों ने इन कार्यशालाओं के आयोजन पर अपना संतोष व्यक्त किया और सत्रांत में हुए विचार - विमर्श में प्रतिभागियों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया ।

4. राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें

निदेशक महोदय की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें हर तिमाही के अंतिम महीने में नियमित रूप से (17.12.2018, 28.09.2018, 20.06.2018, 15.03.2018) आयोजित की गई । राजभाषा विभाग, नई दिल्ली द्वारा विनिर्दिष्ट मदें प्रत्येक तिमाही की बैठक की कार्यसूची में शामिल की गईं।

5. हिंदी में बोलचाल की कक्षाएं

संस्थान में **बोलचाल की हिंदी कक्षाएं** जनवरी 11 से शुरू की गई। डॉ. ए. चंद्रशेखर, कुलसचिव, आईआईएसटी द्वारा इस कक्षा का उदघाटन किया गया । उन्होंने प्रतिभागियों को यह सलाह दी कि वे ऐसे अवसरों का लाभ उठाएं एवं हिंदी में बात करने की क्षमता हासिल करें। अतिथि वक्ता के रूप में आमंत्रित डॉ. एन. सुरेश, निदेशक, अनुवाद अध्ययन केंद्र, केरल विश्वविद्यालय ने प्रथम कक्षा का संचालन किया । जनवरी से अप्रैल तक आयोजित इस कक्षा का संचालन श्री. आर. जयपाल, हिंदी अधिकारी ने किया। संस्थान के हिंदीतर भाषी छात्र, परियोजना अध्येता, अधिकारी एवं कर्मचारीगण इन कक्षाओं से लाभान्वित हुए।

6. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की गतिविधियों में भागीदारी

आईआईएसटी, वलियमला नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, तिरुवनंतपुरम के सदस्य कार्यालय है और इसके क्रियाकलापों में सक्रिय रूप से भाग लेता है । इसके तत्वावधान में आयोजित संयुक्त हिंदी पखवाड़ा समारोह में संस्थान के कर्मचारियों ने भाग लिया और **टिप्पण व आलेखन प्रतियोगिता में श्रीमती मिनी कुमारी आर. जी.**, वरिष्ठ सहायक, शैक्षिकी कार्यालय को **द्वितीय पुरस्कार** तथा **श्रीमती रेनी तोमस**, वरिष्ठ लेखा अधिकारी, लेखा प्रभाग को **कविता पाठ** में **प्रथम पुरस्कार** एवं **आशुभाषण** में **तृतीय पुरस्कार** भी मिले।

तिरुवनंतपुरम के चार नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के बीच में आयोजित अंतर नराकास प्रतियोगिताओं में भी हमारे संस्थान के कार्मिकों ने भाग लिया और **हिंदीतर भाषियों के लिए आयोजित आशु भाषण प्रतियोगिता** में **श्रीमती रेनी तोमस**, वरिष्ठ लेखा अधिकारी ने प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया।

7. हिंदी तकनीकी संगोष्ठी

इस वर्ष अंतरिक्ष विभाग के तिरुवनंतपुरम पूल के वीएसएससी, एलपीएससी, आईपीआरसी, आईआईएसयू एवं एपीईपी के सहयोग से आईआईएसटी में अक्तूबर 30 व 31, को **'अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में हाल की प्रगति'** विषय पर हिंदी तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन किया गया । इस संगोष्ठी के दौरान **'राजभाषा हिंदी का बदलता स्वरूप'** विषय पर राजभाषा सत्र भी शामिल किया गया । डॉ. बी. एन. सुरेश, माननीय कुलाधिपति, आईआईएसटी ने संगोष्ठी का उदघाटन किया। श्री. एम. वी. ढेकणे, प्रोफसर सतीश धवन प्रोफसर, आईआईएसटी ने संगोष्ठी के तकनीकी सत्र का मुख्य भाषण दिया । प्रोफसर बी. वाई. ललितांबा, हिंदी विद्वान व सदस्य, संयुक्त हिंदी सलाहकार समिति ने आमंत्रित भाषण दिया। वीएसएससी, एलपीएससी, आईपीआरसी, आईआईएसयू, एपीईपी एवं आईआईएसटी से कुल 36 लेख दो दिवसीय संगोष्ठी के दौरान प्रस्तुत किए गए जिनमें आईआईएसटी के छह लेख भी शामिल थे । चार तकनीकी सत्र और एक राजभाषा सत्र रखे गए । प्रत्येक सत्र में हिंदी भाषी एवं हिंदीतर भाषी प्रवर्ग के उत्कृष्ट प्रस्तुतकर्ता को पुरस्कार भी दिए गए। सभी लेखों पर संगोष्ठी में सार्थक चर्चा हुई तथा अद्यतन ज्ञान का आदान प्रदान हुआ जिससे सभी प्रतिभागी लाभान्वित हुए ।

आपकी प्रतिक्रिया

हिंदी अनुभाग / Hindi Section
तारीख / Date 23/10/17
आ. सं./ In. No. 359

भारत सरकार
अंतरिक्ष विभाग
अंतरिक्ष उपयोग केंद्र
आंबावाड़ी विस्तार डाकघर
अहमदाबाद - 380015 (भारत)
ई-मेलE-mail:neelu@sac.isro.gov.in

Government of India
Department of Space
Space Applications Center
AmbawadiVistar Post Office
Ahmedabad – 380 015 (India)
फोन Phone: 079-26913280
फैक्स fax : 079-26915801

अंउकें/हिं.प्रका./पावती/2017

13 अक्तूबर, 2017

सेवा में,

श्री आर जयपाल
वरि. हिंदी अधिकारी
भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान
तिरुवनंतपुरम - 695 547

विषयः आईआईएसटी, वलियामला की हिंदी गृहपत्रिका "अंतरिक्ष धाराएँ" के प्रवेशांक की प्राप्ति।

महोदय,

आईआईएसटी की हिंदी गृह-पत्रिका "अंतरिक्ष धाराएँ" का प्रथम अंक प्राप्त हुआ। इतनी सुंदर शुरुआत के लिए आपकी संपूर्ण टीम का अभिनंदन।

"संस्थान की एक झलक" के माध्यम से पाठकों को आईआईएसटी के बारे में जानने का मौका मिलेगा। पत्रिका की पाठ्य सामग्री में विविधता है। कहानियाँ, कविताएँ और लेखों का अच्छा संयोजन है। कार्यालय में हो रहे हिंदी कार्यान्वयन और अन्य समाचारों की पत्रिका में सुंदर प्रस्तुति की गई है।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

नीलू सेठ
(नीलू सेठ)
वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन इसरो isro Indian Space Research Organisation

---

भारत सरकार
अंतरिक्ष विभाग
इसरो नोदन कॉम्प्लेक्स (आईपीआरसी)
महेंद्रगिरि पी.ओ., तिरुनेलवेली ज़िला - 627 133
तमिलनाडु, भारत
दूरभाष : 04637 - 281900 (प्रचालक)
फैक्स : 04637 - 281918 (प्रशासन)
04637 - 281350 (क्रय)
04637 - 281567 (भण्डार)
04637 - 281547 (लेखा)

सत्यमेव जयते

Government of India
Department of Space
ISRO Propulsion Complex (IPRC)
Mahendragiri P.O., Tirunelveli District – 627 133
Tamil Nadu, India
Telephone : 04637 – 281900 (Operator)
Fax : 04637 – 281918 (Administration)
04637 – 281350 (Purchase)
04637 – 281567 (Stores)
04637 – 281547 (Accounts)

सं. आईपीआरसी:प्रशा:V-1:2017

हिंदी अनुभाग / Hindi Section
तारीख / Date 27/09/17
आ. सं./ In. No. 349

सितंबर 22, 2017

सेवा में,

श्री आर. जयपाल,
हिंदी अधिकारी,
भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान,
तिरुवनन्तपुरम।

विषयः आईआईएसटी, वलियमला की हिंदी गृह पत्रिका '**अंतरिक्ष धाराएँ** के प्रवेशांक की पावती।

महोदय,

आपके द्वारा भेजी गई हिंदी गृह पत्रिका '**अंतरिक्ष धाराएँ** के प्रवेशांक की प्रतियां इस कार्यालय को प्राप्त हुई है। पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख, कविताएं और तकनीकी आलेख पठनीय, अत्यन्त उपयोगी, सूचनापरक एवं ज्ञानवर्धक है। पत्रिका संपादन से जुड़े सभी लोग बधाई के पात्र है।

धन्यवाद।

भवदीय,

टी विजय शेखर
[टी विजय शेखर]
कनि. हिंदी अनुवादक

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन इसरो isro Indian Space Research Organisation

---

भारत सरकार
अंतरिक्ष विभाग
(शाखा सचिवालय)
तृतीय तल, लोकनायक भवन,
नई दिल्ली - 110 003
☎ : 011 – 2461 7305
ई-मेल : shankar@isro.gov.in

सत्यमेव जयते

GOVERNMENT OF INDIA
DEPARTMENT OF SPACE
(BRANCH SECRETARIAT)
3rd Floor, Loknayak Bhawan,
New Delhi - 110 003.
FAX NO. 011-2461 7377, 2469 3871
☎ - 011-2461 7305,
E-mail : shankar@isro.gov.in

संख्या. 6(48)/2017

25 अगस्त, 2017

सेवा में,

श्री आर. जयपाल
वरिष्ठ हिंदी अधिकारी
आई आई एस टी,,
तिरुवनंतपुरम

हिंदी अनुभाग / Hindi Section
तारीख / Date 28.08.17
आ. सं./ In. No. 336

विषय : आई आई एस टी की पत्रिका "अंतरिक्ष धाराएँ" के प्रवेशांक की पावती के संदर्भ में।

***

महोदय,

आई आई एस टी की हिंदी गृह पत्रिका "अंतरिक्ष धाराएँ" का प्रथम अंक पा कर मन प्रफुल्लित हुआ। प्रवेशांक में रोचकता और विविधता का सुंदर समावेश हुआ है। प्रथम लेख के रूप में 'संस्थान एक झलक' संस्थान की उत्पति एवं मुख्य क्रियाकलापों के बारे में विहंगम दृश्य प्रस्तुत कराता है। मुहम्मद साबिर आलम की कविताओं में मानवीय संवेदना एवं कल्पना की कोमलता से युक्त एक उभरता कवि दिखाई देता है। संपादक द्वारा प्रस्तुत लेख राजभाषा कार्यान्वयन की व्यावहारिक कठिनाइयों को स्पष्टता से उजागर करने का एक ईमानदार प्रयास है।

मेरा मानना है कि शीघ्रता में अंक के प्रकाशन के कारण प्रूफ रीडिंग से संबंधित कुछ त्रुटियां रह गई हैं जिनका भविष्य में निश्चित रूप से ध्यान रखा जाएगा।

इस स्तुत्य प्रयास के लिए पत्रिका के संपादक मंडल को हार्दिक साधुवाद ।

भवदीय,

(डॉ. शंकर कुमार)
वरिष्ठ हिंदी अधिकारी

भारत सरकार
अंतरिक्ष विभाग
उन्नत आंकड़ा संसाधन अनुसंधान संस्थान
(एड्रिन)
203, अकबर रोड, तारबंद
मनोविकासनगर पोस्ट
सिकंदराबाद - 500 009, भारत
टेलिफोन : 040-27781271 / 76
फैक्स : 040-27781320

GOVERNMENT OF INDIA
DEPARTMENT OF SPACE
ADVANCED DATA PROCESSING RESEARCH INSTITUTE
(ADRIN)
203, AKBAR ROAD, TARBUND
MANOVIKASNAGAR POST
SECUNDERABAD - 500 009, INDIA
Telephone : 040-27781271 / 76
Fax : 040-27781320

'स्पीड पोस्ट'

सं. एड्रिन/प्रशा./रा.भा./2017(सा.प.)

अगस्त/August 21, 2017

सेवा में /To

श्री आर. जयपाल
वरि. हिंदी अधिकारी
भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईएसटी)
अंतरिक्ष विभाग, भारत सरकार
वलियमला, तिरुवनंतपुरम- 695 547, भारत

हिंदी अनुभाग / Hindi Section
तारीख / Date 28.08.17
आ. सं./ In. No. 338

महोदय,

विषय: गृह-पत्रिका 'अंतरिक्ष धाराएं' के प्रथम अंक की प्राप्ति के संबंध में.

*****

भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईएसटी) की हिंदी गृह-पत्रिका **'अंतरिक्ष धाराएं'** के प्रथम अंक की चार प्रतियां हमें प्राप्त हुई है। पत्रिका **'अंतरिक्ष धाराएं'** में लेखों, ज्ञान-विज्ञान, कविता, चित्रकला एवं 'राजभाषा' जैसे विविधता भरे रोचक कृतियों का समावेश किया गया है, जिससे पत्रिका की सामग्री अत्यंत उपयोगी, ज्ञानवर्धक एवं रोचक हो गयी है। इसके अतिरिक्त पत्रिका का मुद्रण अत्यंत आकर्षक है। संस्थान की गतिविधियों को बताते हुए, हिंदी को लोकप्रिय बनाने और हिंदी कार्यान्वयन को बढ़ावा देने की दिशा मे आपका यह प्रयास अत्यंत सराहनीय है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई ।

शुभकामनाओं सहित,

भवदीय,

(के. सनातनन)
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी

भारत सरकार Government of India
इसरो : : अंतरिक्ष विभाग ISRO : : Department of Space
राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र National Remote Sensing Centre
क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केंद्र (मध्य) Regional Remote Sensing Centre (Central)
अमरावती रोड, नागपुर Amravati Road, Nagpur – 440033

सं. आरसी:एनजीपी/7.4/2017

अगस्त 21, 2017

सेवा में,

हिंदी अधिकारी
भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान
अंतरिक्ष विभाग, भारत सरकार
वलियमला पोस्ट
तिरुवनंतपुरम – 695 547 (केरल)

28.08.17
No. 339

विषय: आईआईएसटी की हिंदी गृह-पत्रिका।

महोदय,

भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईएसटी), वलियमला की हिंदी गृह-पत्रिका **"अंतरिक्ष धाराएं"** का प्रवेशांक प्राप्त हुआ। आरआरएससी-सी, नागपुर की ओर से हार्दिक अभिनंदन। आपका एवं आपके टीम का प्रयास सराहनीय है तथा अन्य केंद्रों/यूनिटों के समक्ष राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन की दिशा में एक सार्थक प्रयास का उदाहरण प्रस्तुत कर रहा है। आपके केंद्र द्वारा किया गया प्रयास निस्संदेह प्रशंसनीय है तथा इसकी गुणवत्ता किसी भी आक्षेप से परे है। राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में आईआईएसटी की उपलब्धियों के लिए सहर्ष अभिनंदन।

आशा है, भविष्य में भी हमें आपके **"अंतरिक्ष धाराएं"** के अंक अविरल प्राप्त होते रहेंगे।

शुभकामनाओं सहित,

(मनीष मानेकर)
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

भारत सरकार
अंतरिक्ष विभाग
इसरो जड़त्वीय प्रणाली यूनिट
तिरुवनन्तपुरम-695 013
केरल, भारत
फोन : (0471) 2569129
फैक्स : (0471) 2361973

Government of India
Department of Space
ISRO INERTIAL SYSTEMS UNIT
Thiruvananthapuram-695 013
Kerala, INDIA
Telephone : (0471) 2569129
Fax : (0471) 2361973
ई-मेल/e-mail: r_maheswari@vssc.gov.in

सं.आईआईएसयू/हि.अ/13/2017

अगस्त 22, 2017

सेवा में

वरि. हिंदी अधिकारी,
आईआईएसटी,
वलियमला।

महोदय,

विषय : "अंतरिक्ष धाराएं" पत्रिका की पावती संबंधी

दिनांक अगस्त 09, 2017 के आपके पत्र संख्या रा/आईएनओएल/56/2017 के साथ प्रेषित "अंतरिक्ष धाराएं" का प्रवेशांक हमें प्राप्त हुआ है। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बहुत-बहुत बधाई। हिंदी को लोकप्रिय बनाने और हिंदी कार्यान्वयन को बढ़ावा देने की दिशा में आपका यह प्रयास सराहनीय है। पत्रिका में प्रकाशित रचना "मेरी गलतियां", "खुद ही तय करने होंगे अपने लक्ष्य" और "ओलंपिक में भारत" आदि रचनाएँ रोचक, प्रेरणादायक एवं ज्ञानवर्धक हैं।

पूर्ण विश्वास है कि आपके कुशल संपादकीय कौशल से पत्रिका का भविष्य उज्ज्वल रहेगा। आशा करती हूँ कि यह पत्रिका पाठकों को प्रेरित और प्रोत्साहित करती रहें। पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी कार्मिक बधाई के पात्र हैं और आगामी अंकों के लिए शुभकामनाएँ।

सधन्यवाद

भवदीया,

22/8/17
(आर महेश्वरी अम्मा)
हिंदी अधिकारी

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन Indian Space Research Organization

IIST/IP/59/JAN/2019

हिंदी गृह पत्रिका

अंतरिक्ष धाराएं

(वर्ष 2019 - अंक 2)

पाठकों से अनुरोध

पत्रिका के इस अंक के संबंध में अपने विचार और बहुमूल्य सुझाव हमको ज़रूर भेज दें।

अगले अंक के लिए रचनाएँ, जैसे हिंदी में लेख, लघु कथाएँ, कविताएँ, फिल्म / पुस्तक समीक्षा, यात्रा विवरण, रिपोर्ट, तकनीकी लेख एवं फोटोग्राफ़ी, चित्र, पेन्सिल चित्र, आरेख आदि आमंत्रित हैं।

पाठकों से अनुरोध है कि हिंदी में लिखा हुआ या युनिकोड फोन्ट में टाइप किया हुआ लेख तथा अन्य सामग्री की सोफ्ट कॉपी **अगस्त 31,** 2019 तक hindiofficer@iist.ac.in पर ई मेल करें।